धरती के गीत

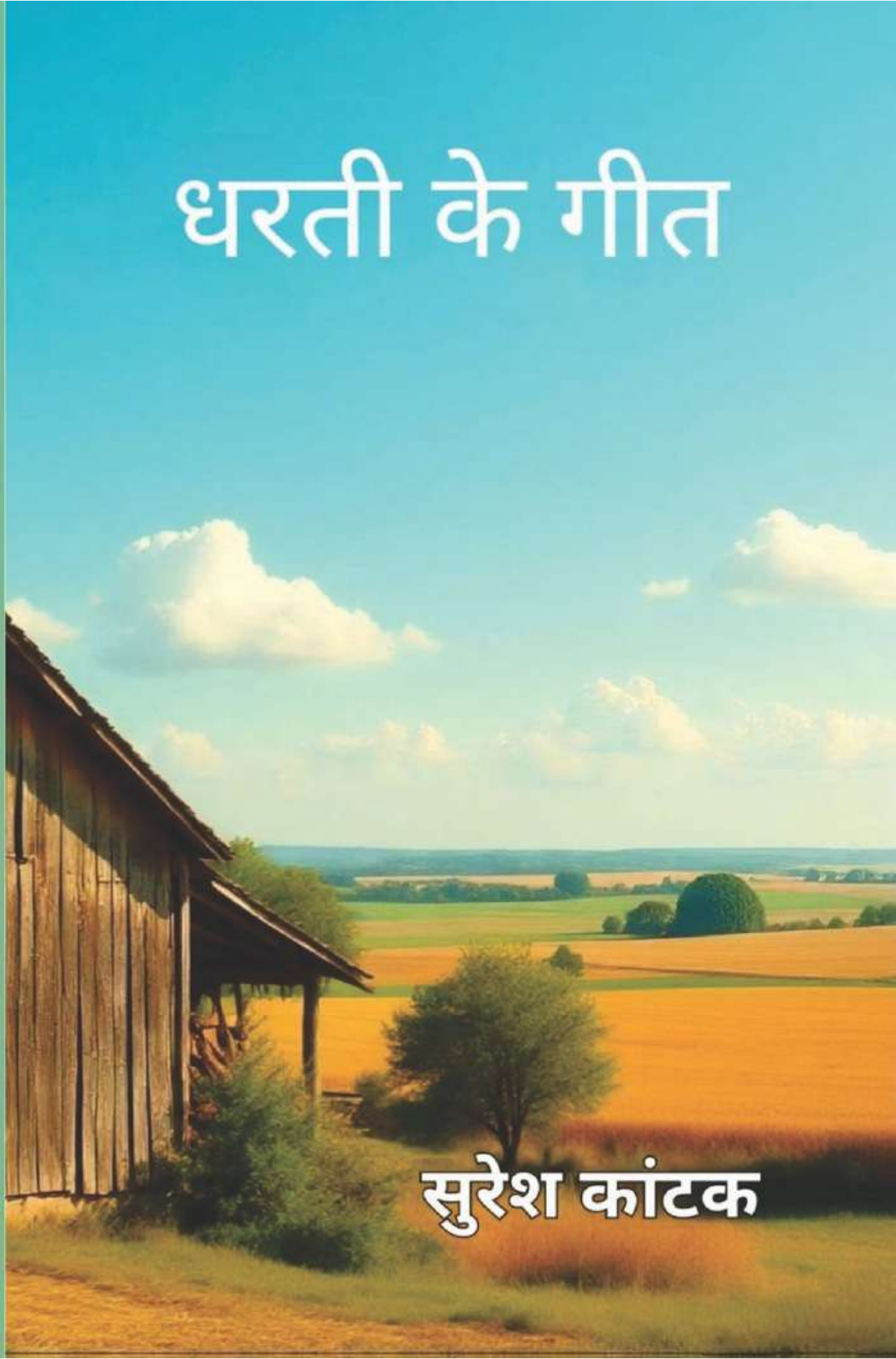

सुरेश कांटक

धरती के गीत - सुरेश कांटक

BHOJPURI SAMSTHANGAN CHARITABLE TRUST

भोजपुरी-हिन्दी रचना-संसार में सुरेश कांटक एगो नामी गिरामी नाँव बा। दुनू भाषा में ऊहाँ के प्रचुर सरजना कइले बानीं। ऊहाँ के डेढ़ दर्जन से बेसी समकालीन भोजपुरी नाटकन के प्रणयन कइले बानीं, जवनन के सफल मंचन खेत-खलिहानन में हजारन दर्शकन के उपस्थिति में भइल बा। 'हाथी के दाँत', 'भाई के धन', 'सरग नरक', 'रधिया' के मंचन गाँव-देहात के लोग भुला ना सके। बाकिर ऊहाँ के नाटककार आ कथाकार व्यक्तित्व के अंतर में एगो तरल वक्रता के अभिव्यंजना ऊहाँ के व्यंग्य कवितन-गीतन में साफ-साफ झलकेला। भोजपुरी व्यंग्य कविता-संग्रह 'का ए बकुला' एकर एगो जीवंत प्रमाण बा। सन् 2025 में प्रकाशित हिन्दी कविता-संग्रह 'आईना हूँ' कांटक जी के सामाजिक सरोकारन से पेहम काव्य-चेतना के समरथाई के फहरात परचम बा।

'धरती के गीत' (भोजपुरी काव्य-संग्रह, 2025) में दूपदी, त्रिपदी चतुष्पदी छांदिक शिल्प के निमन प्रयोग बा। गीतन में भरपूर लयात्मकता बा। रचना-वस्तु के रूप में सुग्गा, मैनी, चिरई, बकरी, गदहा आदि श्रमजीवी निर्दोष आम मनई के प्रतीक के रूप में सटीक चयन बा। जीवे जगत से खटमल, गोजर, साँप, बिलाई, उरुआ आदि के प्रयोग कपटी प्रभु वर्ग के प्रतिनिधि के रूप में प्रतीकित बा। एह संग्रह के गीतन में गहरा सामाजिक चिंता, इहाँ ले जे गहरी उदासी आ नाउम्मीदी के बिम्ब बा, जवन अप्रत्यक्ष रूप से विवेक आ आस का ओरे प्रेरित करता। एह अस्तित्वबोध में परम्परागत संस्कार गीत कजरी, चइता, फगुआ के तान निमन नइखे लागत। लोकराग में गंगा-जमुनी तहज़ीब बचावे के अंतर्ध्वनि बा। प्रकृति आ पर्यावरण के बचावे के आह्वान बा। अवसरवादी भ्रष्ट राजनीति पर वक्र प्रहार के सौंदर्य गुदगुदावत बा। सपना टूटे से आम मनई के सम्वेदना घवाहिल बा। कवितन के विनम्र सम्वेदना संग्रह के विशेषता बा। संग्रह भोजपुरी काव्य सम्वेदना में एगो जबर्दस्त मोड़ बा।

जितेन्द्र कुमार
मो०-9113426600

धरती के गीत

(भोजपुरी काव्य-संग्रह)

सुरेश कांटक

www.bhojpurisahityangan.com

www.bhojpurisahityangan.com

धरती के गीत

(भोजपुरी काव्य-संग्रह)

सुरेश कांटक

BHOJPURI SAHITYANGAN CHARITABLE TRUST

भोजपुरी साहित्यांगन चैरिटेबल ट्रस्ट

bhojpurisahityangan.ct2023@gmail.com

+91 8340535561

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी साहित्यांगन चैरिटेबल ट्रस्ट के चउथा प्रकाशन

धरती के गीत

कवि/गीतकार	:	सुरेश कांटक
ISBN	:	978-81-973622-9-3
पेपरबैक	:	₹ 299.00
पहिलका संस्करण	:	2025
आवरण	:	रचना विकास
सर्वाधिकार	:	सुरेश कांटक
लेखकीय सम्पर्क	:	कांट, (ब्रह्मपुर), बक्सर, बिहार-802112 मोबाइल : +91 9931837620
प्रकाशक	:	भोजपुरी साहित्यांगन चैरिटेबल ट्रस्ट 203, विश्व शाकुन्तल अपार्टमेंट मन्दिर मार्ग, शिवपुरी पच्छिमी, पटना-800023 ई-मेल : bhojpurisahityangan.ct2023@gmail.com वेबसाइट : www.bhojpurisahityangan.com मोबाइल : 91 8340535561

DHARATI KE GEET

(Bhojpuri Poems)

Written by Suresh Kantak

Rs. 299-00 (Paperback)

www.bhojpurisahityangan.com

प्रकाशकीय

सुरेश कांटक भोजपुरी आ हिन्दी साहित्य के एगो जानल-मानल हस्ताक्षर बाड़े। उनकर प्रकाशित किताबन में उनइस गो भोजपुरी के आ पनरह गो हिन्दी के बा। एकरा अलावे भोजपुरी आ हिन्दी के पत्र-पत्रिकन में उनकर अनगिनत गीत, ग़ज़ल, कविता आ कहानियो प्रकाशित बा। देशी-विदेशी मशहूर कहानियन के ऊ भोजपुरी में अनुवादो कइले बाड़े। उनकर जिनिगी जादेतर गँवई परिवेश में बीतल बा आ अबो ओही माहौल-परिदृश्य में गुजर रहल बा।

कांटक जी के लगभग 118 गो भोजपुरी कविता अप्रकाशित बा, जवना के पाँच गो केटगरी में राखल जा सकत बा- 1. जीव-जन्तु जइसे सुग्गा, बकुला, मैना, चिरई, गदहा, खटमल, मिरगा आदि के बहाना बना के लिखल कविता। 2. लोकधुन वाला कविता में कजरी, चइता, फगुआ, पचड़ा, जंतसार वगैरह। 3. ऋतु वर्णन आ खेती-किसानी वाला कविता, जवन ख़ास क के किसानन के बदहाली से जुड़ल बा। 4. देश के दशा-दुर्दशा आ राजनीतिक व्यंग्य-कटाक्ष से जुड़ल कविता। 5. मुक्त-छंद के कविता।

हमरा एह बात के खुशी बा जे 'भोजपुरी साहित्यांगन चैरिटेबल ट्रस्ट' आपन चउथा प्रकाशन कांटक जी के ओह अप्रकाशित कविता के संग्रह 'धरती के गीत' (2025) अपने सभे के सामने ले आइल बा। एह बेहतरीन काव्य-संग्रह ख़ातिर कांटक जी के अनघा बधाई। भरोसा बा जे एह संग्रह के भोजपुरी जगत में स्वागत होई।

रंजन प्रकाश

25 दिसम्बर, 2025
पटना

संचालक, 'भोजपुरी साहित्यांगन'
अध्यक्ष, 'भोजपुरी साहित्यांगन चैरिटेबल ट्रस्ट



www.bhojpurisahityangan.com

www.bhojpurisahityangan.com

कांटक जी के गीत के धरती

कहानी लिखें भा कविता, सुरेश कांटक कबो आपन जमीन ना छोड़ेलें। जहाँ रहेलें, जवन देखेलें, जवन सुनेलें, बोले-बतियावेलें, लोगबाग जइसे जिए-मुएला, ओही के लिखेलें। उनका खातिर एगो जमीन उनकर आपन गाँव-जवार ह आ दूसर उनकर आपन सोच-विचार ह। गाँव-जवार के लोगबाग, खेत-बधार, लोग के मेहनत, हरानी-थकानी, गपशप, उदासी, मनबझाव आ जिए के जिद आ जद्दोजहद के कबो कहानी में कहेलें त कबो कविता आ गीत में। कांटक के गाँव-जवार दूर-दूर ले पसरल बा, कांट गाँव, भोजपुर आ बक्सर से लेके पूरा भोजपुरी अंचल तक आ अतने ले ना, बलुक उहाँ ले बा जहाँ ले लोग अपना बोली-बानी के संगे खेती-किसानी में बा, मेहनत-मजूरी में बा, जाड़ा, गरमी, बरसात के संगे बा। लूक-लहर, जाड़ के ठिठुरन आ बूनी-बदरी के रिमझिम के संगे बा। ऊ ओह जमीन के कवि बाड़न जे अपना गाँव के जमीन से देश आ दुनिया के हर गतिविधि प नजर राखेलें आ ओह के अपना गीत-कविता में ले आवेलें। कांटक के कविता में धान रोपत मेहरारू बाड़ी जेके लोग रोपनी कहेला, आ अब धान रोपत मरदो लोग बा जेके लोग रोपना कहेला। अब खेती में हर बैल के जगह ट्रैक्टर ले लेले बा आ दवनी ओसवनी हार्वेस्टर। एह तकनीकी बदलाव के तरफ उनकर ध्यान बा। बूनी बदरी प किसान रीझ जाला, उनका कविता में ई रीझ बा आ सुखाड़ में फसल के बरबादी प खीझो बा। फसल के सूखे प भारी अनराजी (नाराजगी) एह बात के चलते बा कि खेती किसानी प सरकार के कवनो ध्यान नइखे। कवि के एहू बात के फिकिर बा कि धरती के पानी के सोता सूखत जा रहल बा। पानी के लेयर पताले भाग रहल बा- ''भागता पतालवा में पनिया के लेयर/ हुदु हुदु पानी देवे बोरिनिन के तेवर।''

कांटक जी ''धरती के गीत'' के सुनवइया-रचवइया हवे। धरती प अनेक तरह के जिया-जंतु होले, अनेक तरह के चिरई, अनेक रकम के

www.bhojpurisahityangan.com

घास-पात, बहुत तरह के फसल (जजात), रकम-रकम में लोग आ कथा-कहाउत। कांटक जी के कविता आ गीत के ई खांटी आधार भूमि ह। एहू समय, जबकि लोग जतना तन से ओह से बेसी कतहीं मन से, बहरवांसू भ चलल बा, कवि गाँव में ना खाली रह रहल बा, बलुक रम रहल बा। आसानी से आजकाल लोग कह देला कि अब पहिले वाली कुल बतिये बदल गइल बा। एक सिरा से सब कुछ खारिज कर देला। बदले के त बहुते कुछ बदलल बा, बाकी बूझल जरूरी बा कि लोग आजो खेती कर रहल बा। हर-बैल के जगह ट्रैक्टर बा, धान रोपे वाली मेहरारून के जगह पर मरद बा, जनकंठ के गीत के जगह यंत्रगीत बा, गीत में दुख-सुख के जगह मेहरारून के लंगट-उघार चित्र बा। बहुते कवि बाड़न जे पुरनके प फिदा बाड़न। उहे दोहरा रहल बाड़न। कांटक जी एह से अलग बाड़न। ऊ एह पूरा बदलाव के पढ़त-गढ़त कवि बाड़न। बदलाव के दिशा आ दशा के समझत। सत्ता आ सत्ता के तंत्र के खेत-विरोधी, खेती-विरोधी, जिया-जंतु आ वन आ पहाड़-विरोधी, आदमी के हिआव आ मेल-मोहब्बत विरोधी रीति आ रवइया के रग-रग पहिचानत।

कांटक जी के धरती गीत में कटत जंगल, नष्ट होत पहाड़, तड़पत चिरई आ चिरई के उजरत खोंता, जाति-धरम के बहस आ झगड़ा के संगे-संग यूक्रेन आ गाजा आ बम बारूद बा। कवि के धरती एह सब के लेके चिंता में बिया। जंगल, पहाड़ आ चिरई के उजरत खोंता के बात जब चली त 'आरे' आ 'हसदेवा' के जंगल इयाद आई आ बुलडोजरो राज अदबद इयाद आई जेमे ना जाने कतने बसेरा उजर गइल। हर तरह के नाश आ युद्ध के विरोध में धरती के ई फरियाद सुनल जाए- ''धरती पुकार करे/ के बा सुनवइया/ लड़इया काहे होता ए मोर भइया!''

जंगल आ पहाड़ के बरबादी पर बात आज के तारीख में राजनीति आ सत्ता के चरित्र पर बात कहाई। झारखंड होखे भा छत्तीसगढ़, जंगल आ पहाड़ प कॉरपोरेटी नजर बा, ऊ सब अपना कब्जा में लेत जा रहल बा आ आज के सरकार अपना कॉरपोरेट इयार के फोकट में, हर तरह के फरियाद आ लोकतांत्रिक विरोध के अनदेखा क के देत जा रहल बा। जंगल आ पहाड़ के रहवासी आ असली हकदार लोग प दमन आ अत्याचार के हद के पार जाके। कवितन में कवि बहुत कुछ कतहीं सीधे-सीधे कहत बा आ कई जगह इशारा में, संकेत में। 'मिरगा' गीत एह लिहाज से जरूर देखे के चाहीं। रामकथा में सोना के मिरगा छल-कपट के प्रतीक बा, आज के समय

www.bhojpurisahityangan.com

में, सत्ता जवन 'सुबरन सपना' जनता के देखा रहल बिया, कवि ओह तरफ संकेत करत बा। ई सपना बुद्धि-विवेक सब हर लेता। कुछ लाइन देखल जाए-

''दउरत बिहरत गाँव-नगर में
बन-परबत सब छीना
मीता के हीता खातिर सीता के
पत हर लीना
छुपा-छुपा के परदा के भीतर
सब कुछ बेंचा-कीना रे भगता!''

कांटक जी के कविता में आम आदमी के जीवन के साँच बा, ओह कारण पर फोकस बा जेके चलते आम आदमी के जिअल मोहाल बा। आ अतने ले नाहीं, कवि आम आदमी के आजादी आ खुशहाली के छंद भी रचले बा। मुकुती खातिर संगठित प्रतिरोध के आवाहन भी बा-

''सभका से मिलि-जुलि कहु आपन बतिया
नाहीं त कटले ना कटी ई रतिया
अपनन के बीचे सभ भेदवा भुला ले।''

कांटक जी के भोजपुरी कविता खेती-किसानी के ओह जमीन के ह जहाँ हर मौसम के किसान अपना अंदाज में, तुक-ताल में संकारेला। जहाँ हर नक्षत्र के आपन पाँव होला। लगभग भुला गइल संदर्भ किसानी के कविता के जमीन प आपन पाँव रोप रहल बा। अदरा नक्षत्र से धान के खेती के काज शुरू होला। हथिया के बाद चितरा नक्षत्र आवेला। ता के बाद सेवाती। किसान लोग पहिले नक्षत्र के बारे में बतियावे लोग। कवि ओह बतकही के कविता करत बा। हथिया नक्षत्र में पानी पड़ल धान खातिर बहुत जरूरी होला। हथिया के बाद चितरा के बूनी के महातम बा। हथिया में बूनी के बाद खेत के आर प रामी लेके घूमत किसान देखे के होखे त कांटक के कविता पढ़े के परी। रामी लेके एह गरज से कि केकड़ा के छेद जेसे खेत के पानी बह जाला ओह के बन कइल जा सके। एगो कविता में मकई के बाल के सुंदर सिरिजना के वर्णन बा। मकई के दाना कतने तह भीतर आ कतार के कतार। कवि एह के प्रकृति के कलाकारी कहत बा।

सुरेश कांटक के गीत आ कविता में बगइचा, फुलवारी बार-बार आवेला। ई बड़ा नेह आ जतन से लगावल बाग आ फुलवारी ह। ई कवि के आपन देस आ दुनिया ह आ एह में कवि के लोग रहेला, कवि के दुनिया

www.bhojpurisahityangan.com

में जवन कुछ बा, ऊ बा आ बहुत सुंदर बा। आज ऊ बाग, ऊ फुलवारी, कवि के लोगबाग, समूचा जीव, पंछी-परानी संकट में बा। आजादी के बाद एह के सजे के रहे, खूब आजादी के साथ बिहंसे के रहे, ऊ संभव ना भइल। कविता कवि के एह फिकिर के गवाह बिया। कवि के दुनिया में लोक के आपन धुन बा। कवि एह धुन के खूब प्रयोग करेला। फगुआ, चइता, कजरी, निरगुन के आज के संदर्भ से जोड़ के कवि एह धुन सबके नया प्रवाह दे रहल बा, नया जीवन दे रहल बा। एगो निरगुन देखल जाए-

''गंगा रे जमुन बीचे
प्यारी रे धरतिया
ताहि बीचे फुलवा फुलाए हे राम!
ताहि फुलवा के लागल
केकर नजरिया
फुलवा लागल कुम्हिलाए हे राम!
रंउदत फुलवा के अइले मदरिया
अनहद जलिया बिछाये हे राम!
डमरू बजावे घूमि
गंउवा-शहरिया
झुठो फुरो गलिया बजाये हे राम!
बिखिया बोवेला बीचे
प्यारी रे धरतिया के
भेदवा के गंछिया लगाये हे राम!
भंवरा-चिरइयन के
जिउवा उदसले
रोजे-रोजे पंखिया कटाये हे राम!

एह निरगुन के भंवरा आ चिरई के जी उदास बा। कवि उदास बा, लोग उदास बा। पेड़ पालो उदास बा। कवि के भंवरा पारंपरिक 'निरगुण भंवरवा के तहरा संगे जाई' के लगे क ह। कवि निरगुन के परंपरा के नया करत बा। भोलानाथ गहमरी के 'कवना खोंतवा में लुकइलू आहि रे बालम चिरई' के लगे जाता। प्रतिरोध एह में बहुत शांत स्वर में बा। बहुत असरदार।

-बलभद्र



www.bhojpurisahityangan.com

अनुक्रम

✦ प्रकाशकीय 5
✦ कांटक जी के गीत के धरती 7

1. हमरा लागे काहें डर 15
2. मिरगा 17
3. बोल भइया हइसा 19
4. सकल रस चूसेला 21
5. उरूआ जी के आरती 22
6. कजरी 23
7. एगो चइता 24
8. चइता के तान 25
9. ए बबुआ ई फगुआ ह 26
10. फगुआ में गोपाला 28
11. निरगुन 29
12. रोपनी गीत 31
13. धरती गीत 32
14. हुड़का गीत 33
15. हथिया नछत्तर के गीत 34
16. चितरा के चित्र 35
17. होरी गीत 37
18. राग सरगम के 38
19. लोकराग-एक 39
20. लोकराग-दू 40
21. लोकराग-तीन 41
22. एगो लोकधुन 43
23. खेतवा जोतात बा 45
24. धानवा रोपात नइखे 47

www.bhojpurisahityangan.com

25. जहर भइल जीना 49
26. लहर लहर लहरेला 50
27. दाल भात तरकारी 51
28. रिमझिम बरसे पनिया 52
29. आईं बचाईं जा 53
30. सावन के गर्मी 54
31. शीतलहरी में 55
32. बाकिर जाड़ ई अबहिन हाँकी 57
33. गंगा जी के धार में 59
34. गंगा के अररिया 60
35. हई देखीं 61
36. कठिन समइया 62
37. आपन अनकर 64
38. माई बाबू के नेकी 65
39. हमहूँ झमकाईं 66
40. मराइल काहें मतिया 67
41. चल रे रेलिया 68
42. सँइया के सजल समाज 69
43. सँइतल सपनवा 70
44. देसवा के नसवा 71
45. तनी हँसि लीहीं 72
46. का बात बा अइसन 73
47. आइल बाड़े नेताजी 74
48. केकरा प करहूँ सिंगार 75
49. ए दउलत के नाती 76
50. होता दुरगतिया 77
51. हिंदुस्तान ह महान 78
52. विकास के कइसन बा नजारा 79
53. मोह 80
54. बोलावे आपन गाँव 81
55. गँगिया माई के पीर 82
56. दलिद्दर 83

www.bhojpurisahityangan.com

57. माई-बाबू 84
58. फौजी लो के हाल 85
59. महान भोजपुरिया 86
60. चुटुकी भर सेनूर 87
61. कवना नगरिया में 88
62. बिरवा लगवनी एगो 89
63. कठपुतरी 90
64. ठगवा नगरिया 91
65. ए भइया 92
66. हमरी नगरिया 93
67. नाहीं लागेला मनवा 94
68. कहँवा से आ गइल 95
69. हम का करब 96
70. दुखी मन के उद्‌गार 97
71. अचके एगो बात कँउधल 98
72. बोलीं राम-राम 99
73. भोजपुरी कविता के शेषांस 100
74. ए बाबा 101
75. बुनियादी ममिला 103
76. कटेला 105
77. देख-देख भइया 107
78. भाई बड़ मनई बनी 109
79. कइसे का कहीं 111
80. नेह-नाता 113
81. काहें भइल ई बवाल 115
82. दुखवा गरीब के 117
83. जाने काहें दो त 119
84. दरूइया रे 121
85. मायापुर नगरिया में 123
86. जाल बिनींला झीनी 125
87. हई देखऽ हो 127
88. पियासल आत्मा 129

www.bhojpurisahityangan.com

89. खटाई 131
90. बाटे बबुआ अकेल 133
91. हाय पुनरबस 135
92. राम जी से अरजी 138
94. मन के बात 140
94. एगो टापू 142
95. ई कइसन मिठाई 144
96. हम भक्त हईं 146
97. हाय रे अग्निवीर 149
98. एगो भाई के बयान 151
99. एगो व्यंग्य कविता 153
100. बघवा मास्टर 155
101. का इहे प्यार ह 157
102. ऊ रोटी ना ह 159
103. कुटुकी-एक 160
104. कुटुकी-दू 161
105. कुटुकी-तीन 162
106. कुटुकी-चार 164
107. कुटुकी-पाँच 165
108. सुग्गा 167
109 रोवेले मइंनिया बगिया में 169
110. चिरइया रे 170
111. कउआ 171
112. खटमल जी 172
113. गोजर के गोड 173
114. साँप जीयत बा 175
115. खिसियाइल बिलइया 176
116. कुकुर 177
117. बकरिया रे 178
118. गदहा गाथा 180



www.bhojpurisahityangan.com

हमरा लागे काहें डर

नाँव ह काँटक
हवे कँटवे में घर
हमरा लागे काहें डर
थाना ह बरहपुर जिला बगसर
हमरा लागे काहें डर!

कँटवे में रहींला
आ कँटवे बिछाइला
कँटवे ओढ़ीला अवरी कँटवे चबाइला
कँटवे में सपना देखीं सुघर - सुघर
हमरा लागे काहें डर!

झूठ बोले राजा चाहे
झूठ बोले रानी
अपने से अपने बिगाड़ेले कहानी
भँइसा उँकर सभ हरियरी जाले चर
हमरा लागे काहें डर!

हरदम मेहरी रहेली
हमर फूलल
दिने राती देली अमरूध घूलल-घूलल
टोकला प चुपे भागि जाली नइहर
हमरा लागे काहें डर!

राजाजी से कहनीं
आकास में न घूमीं
अपने धरतिया से प्यार करीं चूमीं
बाकी ऊ इयरवन के भरेलन घर
हमरा लागे काहें डर!

www.bhojpurisahityangan.com

एक दिन सपना में
अइली भारत माता
रोवे लगली मुअना ई कहाँ लेके जाता
सउदा करेला, नोचे गतर - गतर
हमरा लागे काहें डर!

कांटक भरोसा हम
करीं अब केकर
सगरो अन्हार लागे महिमा ई केकर
एके रंग के फुलवा फुलाई सबहर
हमरा लागे काहें डर!

किसिम-किसिम के ना
फुलवा फुलाई
भँवरा गुनगुनाई नाहीं कोइलर गाई
करिया बदरिया बनल अजगर
हमरा लागे तबे डर!

www.bhojpurisahityangan.com

मिरगा

एही मिरगा छल कीना रे भगता
एही मिरगा छल कीना
दिखत दिखावत सुबरन सपना
बुधि विवेक हर लीना रे भगता
एही मिरगा छल कीना।

धन जन दारा पूत नसावत
लहू-लहू कर दीना
जंग रचत निज स्वारथ हित में
करत तेजारत घीना
कपट द्वेष ईर्ष्या से गदरल
मिथ्या का जल पीना रे भगता
एही मिरगा छल कीना।

दउरत बिहरत ग्राम नगर में
वन परबत सब धीना
मीता के हीता खातिर सीता के
पत हरि लीना
छुप-छुप के परदा के भीतर
सबकुछ बेचा कीना रे भगता
एही मिरगा छल कीना।

छन-छन बदलत रूप डगर में
मोहत सकल प्रवीना
चूमत चाटत खलनायक पद
उसके रहत अधीना
लहू-लहू खेलत उसके संग
जन का मुश्किल जीना रे भगता
एही मिरगा छल कीना।

www.bhojpurisahityangan.com

कांटक कहत छली एह जुग का
औरों कहीं मिली ना
चंचल चित चितवन अति चंचल
स्थिर कहीं चली ना
डारत कारा में सवाल को
चुपके अंत करी ना भगता
एही मिरगा छल कीना।



www.bhojpurisahityangan.com

बोल भइया हइसा

बोल भइया हइसा
कइसा रे कइसा
खेत चरे भँइसा
कइसा रे कइसा।

ई बिलइया मउसी
कोदो चलउँसी
बिलरा बेराम बा
हमरा कवन काम बा
कुंभ में सतइसा
कइसा रे कइसा।

आरे आवऽ पारे आवऽ
नदिया किनारे आवऽ
सोने के कटोरिया में
दूध भात ले ले आवऽ
लउके खाली पइसा
कइसा रे कइसा।

लँगटा गोसाईं
दही चूड़ा खाई
मलिया में तेल बा
चप-चप लगाई
राजा रानी जइसा
कइसा रे कइसा।

उकुड़ी आ बुकुड़ी
सोने के टुकुड़ी
जाड़ में नहाई
काँपी अउर सुकुड़ी
उनुका गलइचा

www.bhojpurisahityangan.com

कइसा रे कइसा।
आन्हर गुरू बहिर चेला
माँगे गुड़ ले आवे ढेला
जुग-जुग के पाप के
भगावे के उपइया देला
तइसा के तइसा
कइसा रे कइसा।

ताल रे तलइया
घुमरी परइया
राजा जी राज खातिर
शुरू भूलभुलइया
जेकरे में सोना परल
ओकरे भगइसा।

आन दे रे मान दे
जान आ परान दे
सभ आपन दान दे
सतुआ पिसान दे
खेल खेली घँइसा
अइसा रे अइसा।

लाल बुझक्कड़ तइसा
हइसा रे हइसा
खेत चरे भँइसा
कइसा रे कइसा।



www.bhojpurisahityangan.com

सकल रस चूसेला

भइया कइसन बा आइल बहार सकल रस चूसेला
बनि आइल चमन रखवार सकल रस चूसेला।

मीठी-मीठी बतियन से मनवा के मोहे
सपना देखावे रोज भीतरा से टोहे
दुई-दुई गो भेटाइल बा यार!
सकल रस चूसेला .....

बड़ा रे जतनवा लगवनी फुलवारी
डाढ़े डाढ़े फलवा से दिहनी सँवारी
ई भँवरवा बड़ा रे हतेयार!
सकल रस चूसेला .....

उड़त तितिलियन के जाल में फँसावे
हँसल खेलल एकरा तनिको ना भावे
कहे सभके करब हम उद्धार!
सकल रस चूसेला .....

चीतन के भइले खोराक सभ हरिनवा
चानो सुरुज गिने अँगुरी प दिनवा
अचके हो जाई कब दो अन्हार!
सकल रस चूसेला .....

कांटक सगुनवा उठावेलें मन में
कहिया दो चिनगारी उठी जन जन में
कबले रहिहें नवहिया बेमार!
सकल रस चूसेला .....



www.bhojpurisahityangan.com

उरूआ जी के आरती

उरुअवा हो तू त बड़ भगमानी
सगरो अन्हरिया तहार जजमानी।

कुच-कुच अन्हरिया में करेलऽ जोग हो
नन्ही-नन्हीं जीव के लगावे ल भोग हो
कहेला लोग सभ बड़का गेयानी!

लछिमी कुबेर जी मालिक हवें खास हो
रहेलऽ हरदम तू ओही लोग के पास हो
तहरे लोगन के चलेला मनमानी!

एलिन मसक देवे ट्रंप जी के पहरा
अडानी बान्हें गोदीजी के सेहरा
मिलि जुलि नवहिन के लीले जवानी!

होला बिनास तहरा लउके बिकास हो
रउँदेला घोड़ा तहार हरियर घास हो
काटेलऽ तखत प बइठल तू घानी!

लहर सिकोरऽ अबहुओ से बबूआ
मुअलो प ना त कहइब तू उरुआ
कहियो त तहरो प फिरि जाई घानी!

उरुआ जी सभका के उरुआ बनावेलऽ
चुपे - चुपे आपन आबादी बढ़ावेलऽ
फँसि जइब पिंजड़ा में याद आई नानी!

कांटक जी कहेले होई जब भोर हो
होई अँजोर फइली चहुँओर हो
डूबे के मिली ना चुरुओ भर पानी!



www.bhojpurisahityangan.com

कजरी

हरी-हरी भावे ना तनिको कजरिया
देखत खेत अरिया ए हरी!
हरी-हरी बरिसे ना तनिको बदरिया
झँखत बा बधरिया ए हरी!

राजावा के चिंतावा में दंगावा लुकाये रामा
उनुका त अगिला चुनउवा सताये रामा
हरी-हरी चाहे ऊ त होखे एक गदरिया,
देखत खेत अरिया ए हरी!

सावन महीनावा ई लागेला डेरावन रामा
कतहीं सुनाला नाहीं कजरी आ गायन रामा
हरी-हरी ओठवा प परल फेफरिया,
देखत खेत अरिया ए हरी!

सखियन के मनवा डेराइले सपनवा रामा
लउकेला मणिपुरवा सभके नयनवा रामा
हरी-हरी दरकेला दिलवा भितरिया,
देखत खेत अरिया ए हरी!

दीदियन के सगरो सुनात बा दरदिया रामा
लउकेला इजतिया उघारेला पपिया रामा
हरी-हरी कइसे कढ़ाई कजरिया,
देखत खेत अरिया ए हरी!

कांटक किसनवन के कइसन कहनिया रामा
पानी बिना उतरेला जिनगी के पनिया रामा
हरी-हरी देसवो के उतरल पनिया,
देखत ई बजरिया ए हरी!



www.bhojpurisahityangan.com

एगो चइता

महुआ बिनन नाहीं जाइब हो रामा
देवरा के संगवा! महुआ .....

कुछ महुआ बीने देवरा
कुछ ताके जोबना
फुसु-फुसु कहे भइया बाड़े तहरा जोग ना
पियऊ से बतिया बताइब हो रामा
देवरा के संगवा! महुआ .....

रहि-रहि देवरा झाँकेला मोरे अँखिया
बेरि-बेरि हमसे
मिलावेला अँखिया
पियवा से लहरा लगाइब हो रामा
देवरा के संगवा! महुआ .....

फगुआ बितल चढ़ि गइले चइतवा
मनवा के बतिया
ना बूझे बउरहवा
केकरा से पीरवा बताइब हो रामा
देवरा के संगवा! महुआ .....

पेटवा के पेचे पिया
गइले बिदेसवा
फोनवो ना करे नाहीं भेजेले सनेसवा
कांटक से फोनवा कराइब हो रामा
देवरा के संगवा! महुअ .....



www.bhojpurisahityangan.com

चइता के तान

गम-गम गमके बधरिया हो रामा, चइत महीनवा
भावे नहीं गँउवा शहरिया हो रामा, चइत महीनवा!

आमवा मोजरिया मउरिया के शोभा
मधुआ चूसेला रस मातल लोभा
लुकि छिपि बोले कोइलरिया हो रामा, चइत महीनवा!

फुलवा फुलइले सभ बजिया लगाके
गंधवा उड़ावे सभ धधा के अगराके
गमकि उठल भोरहरिया हो रामा, चइत महीनवा!

देह सिहरावे भोरे-भोरे के बयरिया
बिरह में तड़पे बलमुआ के गोरिया
अंगे-अंगे उठेला लहरिया हो रामा, चइत महीनवा!

निरमोही सँइया फगुअवा गँववले
पइसा के पीछे-पीछे दिने राति धवले
माया में फँसवलस बजरिया हो रामा, चइत महीनवा!

अइते त महुआ बिनन सँघे जइतीं
दिलवा के बतिया उँका से बतिअइतीं
लगिते सोहावन सेजरिया हो रामा, चइत महीनवा!

कांटक बलमुआ के तनिका बोला द
गमकत खेतवा बधरिया देखा द
बितल जाता असहीं उमरिया हो रामा, चइत महीनवा!



www.bhojpurisahityangan.com

ए बबुआ ई फगुआ ह

महा मिलन के अगुआ ह
ए बबुआ ई फगुआ ह।

आइल फागुन जाइ लजाइल
बन बधार हरियर लहराइल
ठूँठ ठाँठ में पनखी फेंकलस
फेंड़ रूख नीके अगराइल
फगुनी चलल बयार जगावे
नीन भगावे, अगुआ ह। ए बबुआ ....

गालन प लाली मुसुकाइल
अरुआइल मन खूब धधाइल
बुढ़वो लहुरा देवर बनेला
बुढ़ियो छमछम चलल लजाइल
रंग रंगीला बहरी भीतरी
गतर-गतर उमड़त गदराइल
मन के दाग मेटावे ला ई
मोहक मादक ठगुआ ह। ए बबुआ ....

गाँव नगर में बाजल डंका
जरि जाई सोना के लंका
जलन द्वेष दुश्मनी भगावे
मत करिह तनिको तू शंका
सभके अपने गले लगावे
इहे प्रेम के फगुआ ह। ए बबुआ .....

चढ़ल जवानी मच-मच करे
सपनन के सभ ई सच करे
जोति जरावे नव सिरजन के
मलिन कीट के ई कचकरे

www.bhojpurisahityangan.com

रंगारंग कर दीही सभ कुछ
समुझऽ मत कि भगुआ ह। ए बबुआ ....

कांटक धन दउलत रहि जाई
प्रेम प्यार संगे - संग जाई
अहंकार अभिमान हटावऽ
पाट द सभ गड़हा आ खाई
कोयल कूँके भौंरा गावे
मोजर से मातल तरु भावे
गावऽ गीत मिलन के भइया
ई फगुआ के लगुआ ह। ए बबुआ .....



www.bhojpurisahityangan.com

फगुआ में गोपाला

हमार रोवताटे गोपाला चुपात नइखे!
जबसे बा देखले ई मंत्री जी के चोरी
चोरी सीनाजोरी अवरू लीलत एगो छोरी
कइसन दो त भइल बा चिन्हात नइखे
हमार रोवताटे गोपाला चुपात नइखे! हमार ....

धरमे के आड़ में चलत उनुकर धंधा
मूढ़ लो के निपटे बनावत नीके अंधा
कहे रोजे बाकिर केहू के सुनात नइखे
हमार रोवताटे गोपाला चुपात नइखे! हमार .....

गइया बचावे के जे हालावा मचावे
ओकरे के देखलस गाय कटवावे
टीका फाना में ई लोहू तोपात नइखे
हमार रोवताटे गोपाला चुपात नइखे! हमार .....

मुँहवा से बेटिया बचावे आ पढ़ावे
ऊहे बहुते बेटियन के इज्जत बेचवावे
करे अतना कुकरम कि कहात नइखे
देखे-सुने रोज गोपाला सहात नइखे! हमार .....

छीलि छीलि खात बाटे ऊहे रसगुल्ला
जेकर एके मुद ई बनल बाड़े मुल्ला
साँचे बतिया केहू से लिखात नइखे
हमार रोवताटे गोपाला चुपात नइखे! हमार ....

गोपाला प हमरा परल बा बिपतिया
कतने गायब भइले एकरो सँघतिया
असली जे खाई बा पटात नइखे
हमार रोवताटे गोपाला चुपात नइखे! हमार .....



www.bhojpurisahityangan.com

निरगुन

गंगा रे जमुन बीचे
प्यारी रे धरतिया
ताहि बीचे फुलवा फुलाये हे राम
ताहि फुलवा के लागल
केकरी नजरिया
फुलवा लागल कुम्हिलाये हे राम!

बेचि-बेचि नमवा के
तहरे शिकरिया
सगरी भरम फइलाये हे राम
अपना ही स्वारथ के
लावेला बजरिया
सुन्नर सुदेसवा बिकाये हे राम!

रँउदत फुलवा के
अइले मदरिया
अनहद जलिया बिछाये हे राम
डमरू बजावे घूमि
गँउवा शहरिया में
झूठो फुरो गलिया बजाये हो राम!

बिखिया बोवेला बीचे
प्यारी रे धरतिया के
भेदवा के गछिया लगाये हो राम
भँवरा चिरइयन के
जिउवा उदसले
रोजे-रोजे पँखिया कटाये हो राम!

कांटक कहत काहें
करिया बदरिया में
सुरुज के जोतिया भुलाये हे राम

www.bhojpurisahityangan.com

रहिया अँजोरिया के
जेही रे देखावे आगे
धृतराष्ट्र कारावा पेठाये हे राम!



www.bhojpurisahityangan.com

रोपनी गीत

झर-झर झरेला हो फुहेरवा
सखिया करे मसखरी ना!

बैरी बयरिया परदवा उठावे
लँगों-चँगों करे लेउए में गिरावे
अरिये बइठल बा हो मुअरवा,
सखिया करे मसखरी ना!

पियऊ विदेसवा से ना अइले नउजी
लहुरा देवर मुसुकाय कहे भउजी
किचकिल भइल घरवा-दुअरवा,
सखिया करे मसखरी ना!

गतर-गतर झाँकेला कइसे के तोपीं
बहे चउअइया खेत कइसे के रोपीं
बैरी भइल बा बयरवा
सखिया करे मसखरी ना!

रोपना से रोपनी के धंधा बटइले
का जाने मुदइया ई कहँवा से अइले
जिउ में घोरले बाड़े जहरवा,
सखिया करे मसखरी ना!



www.bhojpurisahityangan.com

धरती गीत

धरती पुकार करे
के बा सुनवइया
लड़इया काहें होता ए मोर भइया!

अखड़ेरे जनवा गँवावेले बालकवा
लहुआ के लोरवा बहावेले अँचरवा
बड़-बड़ सिरिजना ढहत बाड़ें भुइया!

जंगल पहड़वा ढहेला दिने राती
चिरइन के भसल बसेरा फाटे छाती
मुँहवा ताकेला सभे होखे ना सहइया!

निरदोस जनवा केकर का बिगड़ले
दोसरा के भू पर केहू काहें झंडा गड़ले
धनवा के मद में मातल निरदइया!

कबो यूकरेन कबो गाजा तड़पेला
आका मारे धाका पीछे सभ हड़पेला
गरजे बारूद चारो ओर धुइंया-धुइंया!

केकरा करेजवा में आगि धधकेला
फुलवा फुलात देख मन ललचेला
बीचे मझधरवे डुबाइ देवे नइया!

फेंड़ रुख जीया जंतु सभ तड़पेला
प्रानवायु जहर भरल हहरेला
कांटक धरतिया ना बाँची लागल लइया!

www.bhojpurisahityangan.com

हुड़का गीत

पुलुई प पानी जनि डाल रे सजनवा
जरिये जंजाल बा खँघाल रे सजनवा।

जरिये में जोंकवा बा जरिये जंजाल बा
इहे त बनल बाटे जिउवा के काल बा
पाटे नाहीं देबे ऊँच खाल रे सजनवा।

जोंकवा के पोसले बा राज रजधनिया
अपने बनल बाटे बाज अउरी बनिया
इहे सभ करेला कमाल रे सजनवा।

बाजवा झपट्टा मारे जोंक चूसे लहुआ
गद्दिया बनल बाटे उरुवन के कहुआ
बइठल बाटे ऊहे डाले डाल रे सजनवा।

रतिया के दिन कहे दिनवा के रतिया
केहू चिचियाये नाहीं सुने कवनो बतिया
कांटक बजावे खूबे गाल रे सजनवा।

पुलुई प पानी जनि डाल रे सजनवा
जरिये जंजाल बा खँघाल रे सजनवा।



www.bhojpurisahityangan.com

हथिया नछतर के गीत

हथिया झूमत झामत चलेले सिवानावा में
भाँजे मुँगरी किसान अपना मनवा में।

सूँढ़वा घुमावे आपन मारे ले झँकोरा
लहरत धानवा के खेत चहुँ ओरा
सिहरे झपसी के झापस घर मकानवा में।

लोहा, तामा, चानी, सोना हथिया के पाँव हो
मारेले हिलोरा तबे गमकेला गाँव हो
दाल - भात के हुलास हर किसानावा में।

बदरी के लदरी बा हथिया के पेट में
भरल लबालब पानी धानवा के खेत में
फूटे लागल फूल लागल गरभल धानवा में।

हरियर कचनार खेत मनवा के मोहे
हाथिया के चारा बीचे धानवा में सोहे
कांटक मनवा मगन आसमानवा में।

आरी - आरी घूमेले किसान भूरि झाँके
खेंखड़न के करनी के रामी लेले ढाँके
बसल बेंगुँची के बकुला परानवा में।

www.bhojpurisahityangan.com

चितरा के चित्र

हथिया बरिस गइल
बरिसल उतरा
देखा-देखी काहें लरिआइल बाटे चितरा!

धानवा गोटात बाटे
कतहीं फुलाता
मने-मने खेतिहर के
मन अगराता
लुका छिपी खेले लागल चितरा छहिंतरा!

तनिको बरिस जाई
फुलवा झराई
धानवा के मथवा
ई पानी में डुबाई
कइसे कटाई धान पनिया के भितरा!

धनवा कटाई नाहीं
खेत ना जोताई
फरहर होई ना
त कइसे बोआई
अचके में सोनावा हो जाई सभ पितरा!

बहि जाई पछेया
त रेंड़ा सिरकियाई
कुहुँकी परान, नाहीं
झूमी मुसुकाई
लोगवा सरपिहें त बनी अपवितरा!

चितरे में मरे धान
हथिया ना बरसे
चितरा बरिस जाउ

www.bhojpurisahityangan.com

खेत सभ तरसे
चितरा बनित तब सभकर हितरा!

कांटक समइया के
हवे इहे फेर हो
हित दुसमन बने
लागे नाहीं देर हो
स्वारथ के दुनिया में कब के बा मितरा!



www.bhojpurisahityangan.com

होरी गीत

कइसे होरी खेलीं हम आज
आहे कइसे होरी खेलीं हम आज
भंग घोराइल गंगो जमुन में पीयत सकल समाज
मतवारे भये सुध बुध बिन
मंत्र मारत सिरताज
हो ..... ला ..... ला .....
लाल रंग में पड़त खटाई
का पे करीं हम नाज
हो ..... ला ..... ला .....
कइसे होरी .....



www.bhojpurisahityangan.com

राग सरगम के

राग सरगम के आवेला दूर से
एगो बाटे निहोरा हजूर से।

काँच कलियन के मोका खिले के
दीहीं अपना प्रीतम से मिले के
नाता तूरीं ना अपना गरूर से।

ई सरोवर मछरियन के घर ह
एगो सुंदर सलोना नगर ह
जाल आपन समेटीं सहूर से।

बड़ी जतन से ई दीपक जरल बा
बीर नवहिन क लहुआ भरल बा
याद राखीं ई बतिया जरूर से।

पाँव राखीं धरतिया प अपना
पूरा होखे दीं माई के सपना
काहें चिपकींला झूठ के कपूर से।

मत बझाईं चिरइयन के दाना
डालि, कांटक करीं ना मनमाना
माई मुकुती चाहत बाड़ी क्रूर से।



www.bhojpurisahityangan.com

लोकराग - एक

कहले राजाजी कबकी आइब
लाखों लाख पहुँचाइब
कि आहो मोरे रामा, कि आहो मोरे रामा-2
देखते सपनवा दिनवा बीतल ए राम!

नाहीं मिलले रोजी - रोटी
सूखि गइली बोटी - बोटी
कि आहो मोरे रामा, कि आहो मोरे रामा-2
देखते - देखत घरवा बीकल ए राम!

बबुआ के बाबू दउरे
चढ़ली जवनिया खउरे
कि आहो मोरे रामा, कि आहो मोरे रामा-2
अँचिया चढ़ल तउवा धीकल ए राम!

बुचिया बेमार हो भइली
दुलम दवइया भइली
कि आहो मोरे रामा, कि आहो मोरे रामा-2
अब ना सहाला उनुकर चीखल ए राम!

कांटक ओराई गइले
चुल्हिया बुताई हो गइले
कि आहो मोरे रामा, कि आहो मोरे रामा-2
चारो ओर तकले रतिया दीखल ए राम!



www.bhojpurisahityangan.com

लोकराग-दू

बलमुआ हो
तनी बोल बतियालऽ
मनवा के अपना कुहेसा मिटालऽ
बलमुआ हो .....।

बोलल बतियावल ह नीमन दवाई
इहे अन्हरिया में रहिया देखाई
कुच-कुच अन्हरिया में दियना जरालऽ
बलमुआ हो .....।

गुमसुम रहला से रोग बढ़िआई
तड़पत रहब ना मिली दवाई
सुख-दुख सँघतियन के जानऽ बचालऽ
बलमुआ हो .....।

लाजे भवह बोले ना सवादे भसुर छोड़े
भोंपुआ के पोंछि काटल भेदवा ना खोले
बंद मुँह राखे के रेवाज मत पालऽ
बलमुआ हो .....।

घरवा से निकलऽ आ गरवा लगावऽ
भेद भाव छोड़ि सभ गीत नया गावऽ
कांटक करेजा के पत्थर हटालऽ
बलमुआ हो .....।

www.bhojpurisahityangan.com

लोकराग–तीन

कबले मिली हो!
कबले मिली हो! कबले मिली!
बोलऽ–बोलऽ हो नोकरिया कबले मिली
पूछे गँउवा शहरिया कबले मिली?

मंदिर – मस्जिद खूबे कइलऽ
खूब मचवलऽ हाला
अमरित दिहलऽ रामनाम के
फेरलऽ खूबे माला
फेंफड़ा सूखल दउरत–दउरत
बितल उमिरिया जाला
बोलऽ–बोलऽ हो नोकरिया कबले मिली?

टूट रहल सपना नवहिन के
सगरो बढ़ल अन्हरिया
लुगरी भइल जिनिगिया देख
सगरो बंद दुअरिया
सउदा कइलऽ देश के हमरा
तहरे बढ़ल बजरिया
बोलऽ–बोलऽ हो नोकरिया कबले मिली?

देश – विदेशे घूमे खातिर
पइसा कहाँ से आइल
बढ़ल टैक्स आ महँगी
सगरो हमरे पेट कटाइल
देहलऽ अरब खरब के माफी
पुँजीपति मुस्काइल
बोलऽ–बोलऽ हो नोकरिया कबले मिली?

जनतंतर के मनतंतर में
बदल के कइलऽ बात

www.bhojpurisahityangan.com

कहलऽ करब बिकास
मारि के खंजर कइलऽ घात
यारन के संग मिलि के
मरलऽ सभके पेट प लात
बोलऽ-बोलऽ हो नोकरिया कबले मिली?

नासि फाँसि के सभके
कांटक आपन काम बनवलऽ
दलदल में अझुरा के जिनगी
देश - बिदेशे धवलऽ
दुनिया के रेकार्ड तूरि के
झूठ महारत पवलऽ
बोलऽ-बोलऽ हो नोकरिया कबले मिली?

www.bhojpurisahityangan.com

एगो लोकधुन

सँइतल सपनवा में
लागि गइल अगिया
सपनवा बचाईं कइसे ए सखिया!

धह-धह जरे देख
जोगवल बगिया
ई बगिया बचाईं कइसे ए सखिया!
सपनवा बचाईं .....

अगिया बुतावे गइले
हमरो बलमुआ
त मरलस कसाई देख ए सखिया!
सपनवा बचाईं .....

एही रे कसइया के
लमहर बँहिया
ई कइसे ममोराई बोल ए सखिया!
सपनवा बचाईं .....

हथवा में एकरा
कनूनी हथियरवा
ई कइसे बदलाई सोच ए सखिया!
सपनवा बचाईं .....

पीठिया प हाथ एकरा
धइले धनपतिया
बा ओकरे सहाई सुन ए सखिया!
सपनवा बचाईं .....

चल-चल मिलिजुलि
भेदवा बतावे सभ

www.bhojpurisahityangan.com

नीनिया भगाईं सुनऽ-सुनऽ ए सखिया!
सपनवा बचाईं .....

कांटक सपनवा
बचावे के बा राह इहे
इहे बा दवाई सुनऽ ए सखिया!
सपनवा बचाईं .....



www.bhojpurisahityangan.com

खेतवा जोतात बा

खेतवा जोतात बा फरहरी
बरिसत केनियो ना बदरी
लागता सुखार परी अबरी
करजा कँपावताटे हड़री।

गरजत तड़पत कबो-कबो आवत
चमकत दमकत भागताटे धावत
घामावा उगत बाटे चमवा जरावत
सुबहे में लागता दुपहरी।

ट्रेक्टर रोटोबेटर खेतवन के जोते
घास-पात साफ करे मटिये में गोते
पूख असरेषावा प असरा बा लागल
लगिहें लेवाड़ तबे सगरी।

सगरो सुनाता बाढ़ कइले बा तबाही
शहर पहाड़ प मचल धावाधाही
धनवा रोपे के जहाँ ताव बाटे बिगड़त
ताके आसमान गाँव नगरी!

असरा उमेद प बीतल सउँसे जिनगी
करजे आभाव में मिलल नाहीं बंदगी
ताजवा के मुँहवा में खाजवा समाइल
बाघावा चबावे बइठल कगरी!

कवना दो देसवा में जागि गइल लोगवा
भागि गइलें तानाशाह राज माँगे लोगवा
महँगी बेकारी से मूअत रहे लोगवा
लोगवा भइल रहे लुगरी!

www.bhojpurisahityangan.com

कांटक किसानवा के कतना बिपतिया
कबहीं रुकल नाहीं साँढ़वा अफतिया
दउरत रगरत मारे रोज ढाही
रउँदत माथावा के पगरी!



www.bhojpurisahityangan.com

धानवा रोपात नइखे

पनिया के पड़ल ठठपाल कि
धानवा रोपात नइखे!
होई का किसनवन के हाल कि
धानवा रोपात नइखे!

सुरुज जरत बाड़ें लउके ना बदरी
केहू नाहीं बात पूछे आवे नाहीं कगरी
सूखि गइल धरती के हाल कि
धानवा रोपात नइखे!

भागता पतालवा में पनिया के लेयर
हुदु-हुदु पानी देवे बोरिनिन के तेवर
परि जाई निपटे अकाल कि
धानवा रोपात नइखे!

जिउवा जाँगर लागल तड़पे परानवा
अधिया बटइया मालगुजारी के धेयानवा
भइले किसानवा कंगाल कि
धानवा रोपात नइखे!

शाम, दाम, दंड, भेद उनुका के फरे
कतहूँ उठावे आ गिरावे काम करे
देखि लीं चलेलन कवन चाल कि
धानवा रोपात नइखे!

गंगा जमुनी तहजीब देखीं जोर मरलस
लछिमी के उरूअन के छोपनी के फरलस
नया-नया पूछेला सवाल कि
धानवा रोपात नइखे!

www.bhojpurisahityangan.com

सावन मासे बहेले पुरवइया
बयला बिलाइल पड़ल आफते में गइया
रजवे खींचेला ओकर खाल कि
धानवा रोपात नइखे!

कांटक ना खेतवन में रोपना भा रोपनी
फेल भइल बुधिया ई अचरज देखनी
केकरा के करीहें हलाल कि
धानवा रोपात नइखे!



www.bhojpurisahityangan.com

जहर भइल जीना

तर-तर चूएला पसीना हो
जहर भइल जीना
तबहूँ बा फइलल सीना हो
जहर भइल जीना।

धनवा के खेतवा में हँचड़त पँकिया
घसिया सोहाला ऊपर घमवा के झँकिया
भादो में कुवार अस महीना हो
जहर भइल जीना .....।

उपरा से घाम नीचे खेतवा के अदहन
चिपिर-चिपिर देहिया प अँटकल धान धन
झाँकि झूँकि देखेला कमीना हो
जहर भइल जीना .....।

दुइ रोटी नास्ता आ दुइ स रुपइया
चमकेला मोती जइसन धान के पुलुइया
मुसुकी बा पिया के नगीना हो
जहर भइल जीना .....।

यूरिया आ डीएपी के भरल बाटे बोरिया
सोहनी के बाद डाले खातिर सोभे अरिया
खेतवा में झरँगा झरी ना हो
जहर भइल जीना .....।



www.bhojpurisahityangan.com

लहर लहर लहरेला

लहर - लहर लहरेला धान हो
हिया हुलसे किसनवा
पुरवइया भरलस उड़ान हो
हिया हुलसे किसनवा।

सउँसे सरेहिया के रूप सँवराइल
निरखे किसनवा त मन अगराइल
बुढ़वो भइल बा जवान हो
हिया हुलसे किसनवा।

पुरवा के झोंका में खेत सभ झूमे
निहुरि लरक सभ एक दूसरा के चूमे
ललचल बा मेघ आसमान हो
हिया हुलसे किसानवा।

चुक जाई करजा आवत अगहनवा
धनिया के चमकी चुनरिया गहनवा
मनवा के पूरी अरमान हो
हिया हुलसे किसनवा।

बबुअन के नँउवा लिखाई इसकुलिया
बने-बने मारल फिरेलन बहेलिया
पा जइहें तनिका गेयान हो
हिया हुलसल किसनवा।

कांटक के ठंढा भइल बा करेजवा
मौसम धरवले बा अइसन धीरजवा
अब होइहें नयका बिहान हो
हिया हुलसे किसनवा।

www.bhojpurisahityangan.com

दाल भात तरकारी

सभका के मिले दाल भात तरकारी
केहू के ना फटही हो देहिया प साड़ी
कपरा प छत होखे, होखे ना बिमारी
पढ़े - लिखे लरिका लरीकिया आ नारी।

इहे शुभ सगुन ले आवे नया साल हो
अबरा के करे नाहीं जबरा हलाल हो
तेज होखे चाल काटे खातिर सभ जाल हो
अदिमी के अदिमी ना खीचे कबो खाल हो।

हवा पानी जंगल जमीन होखे सभके
धरती के फाटे ना करेज नभ डभके
शुद्ध सही पावे नन्हमतुआ आ चभके
दूर होखे दुख सभ घउवा ना टभके।

मेहनत के फल पावे धरती के लाल हो
बचवन के गलिया प चमके गुलाल हो
गेहूँ बूँट धान से हो खेत मालामाल हो
अइसन होखे दमकत नया साल हो।

अइसन होखे सभकर नया साल हो।



www.bhojpurisahityangan.com

रिमझिम बरसे पनिया

मुँह में नाहीं एको दाँत
डोलत जइसे पीपर पात
दादी जाली करे खेत में रोपनियाँ
रिमझिम बरसे पनिया ना।

रिमझिम पानी बाटे बरसत
रोपनी दल के हियरा हरसत
नवकी दादी के कउँचावे
नाच द कनिया, रिमझिम बरसे पनिया ना।

दादी नवकिन के समझावे
कवन दुल्हा मनवा भावे
काहें चउल करेलू
रोक आपन नदनिया, रिमझिम बरसे पनिया ना।

हमहूँ रहीं छैल चिकनिया
हमरो चढ़ल रहे जवनिया
हमहूँ करत रहीं
तहरे अस मनमनिया, रिमझिम बरसे पनिया ना।

हमरो रहन बुढ़ऊ जबले
रहे कमी ना कुछो तबले
अब त बेटा पतोहिया
देबे नाहीं पनिया, रिमझिम बरसे पनिया ना।

कांटक कवन समइया आइल
बेटन के मनवा बउराइल
बुढ़िया माई बैरी
अमरित भइली धनिया, रिमझिम बरसे पनिया ना।



www.bhojpurisahityangan.com

आईं बचाईं जा

मकई के दाना
ऊजर-ऊजर पीयर-पीयर
के सरियावल
कतार के कतार।

बक्सा में बक्सा
आ ओहू में बक्सा
आ ओमे रसबुनिया
गसिन गझिन, केकर सजावल
जे पर अँइठे अनार।

अरबन करोड़न के
रंग पानी कूँची से
हरियर सजइहें फूल पत्तियन से
सउँसे बधार
कवन कलाकार।

खोजींला रोज
ओह माई प्रकृति के
जे देवे किसिम-किसिम के
भोजन अपार
जे तोपल हमनी के
लँगट उघार।

आईं बचाईं जा
उनुके के पूजीं जा
जे दीहल हमनी के
अतना पियार।



www.bhojpurisahityangan.com

सावन के गर्मी

लस-लस करेला पसीना
ए सँइया कुछुओ ना भावे
भइल बा दुभर अब जीना
ए सँइया कुछुओ ना भावे।

भोर दूपहर अवरू सँझिया बा एके
रतिया ना नीन आवे देहिया जे ठेके
अपने पसेनवा से घीना
ए सँइया कुछुओ ना भावे।

सुगा-सुगी अँखिया से अँखिया मिलावे
देखे आ संतोख करे भिरिया ना आवे
देखले में रहे लवलीना
ए सँइया कुछुओ ना भावे।

उमड़े आकाशवा में रहि-रहि बदरी
कतहूँ बहावे कहीं सूखे खेत चमड़ी
तवेला छपर छत टीना
ए सँइया कुछुओ ना भावे।

लथ पथ देह करे मन फेंकीं कपड़ा
बाकी बा संकोच-लाज हो जाई लफड़ा
करम - धरम होई हीना
ए सँइया कुछुओ ना भावे।

बगियो बगइचा में हवा नाहीं सिसके
सभे बा बेहाल हाँके गमछी ना खिसके
कांटक एके काशी भा मदीना
ए सँइया कुछुओ ना भावे।



www.bhojpurisahityangan.com

शीतलहरी में

शीतलहरी में खेतवा पटावेले किसान
नइखे कम्बल रजइया ना देहिया में जान
शीतलहरी में .....।

कट - कट बाजे दाँत थर्-थर् देहिया
धरती के अपना बचावेले नेहिया
खेतवे में बसेला इनिकर परान
शीतलहरी में .....।

लेवा गुदर चद्दर पाला पलानी
हावा बहे जइसे बरफ के पानी
आल्हर परान के हथेली प जान
शीतलहरी में .....।

रतिया आ दिनवा के भेदवा भुलाइल
गेहुँआ पटावे के ताव बाटे आइल
मचल बाटे हाहाकार भइल यूरिया के टान
शीतलहरी में .....।

पाइप बिछवले आ बोरिंग चलवले
घरवा से खेतवा ले बेरि बेरि धवले
कइले कवनो जोगाड़ बेचि बनियन के धान
शीतलहरी में .....।

पँइचा उधारे प टिकल बा खेती
कीमत अनजवा के गरदन के रेती
खेत रोवे हँसे कारखानावा आ खान
शीतलहरी में .....।

एकही हुलास बाटे जिनगी के साथी
असरा चलावेले भीतरी के भाथी

www.bhojpurisahityangan.com

आगि दहकेले रन में जगावेले मान
कांटक कहाला ना अकथ कहानी

जिनगी के गीत केहू सूनी ना जानी
सुने ओकरे हवा में जे तूरेला तान
शीतलहरी में .....।



www.bhojpurisahityangan.com

बाकिर जाड़ ई अबहिन हाँकी

गइल माघ
दिन उन्तीस बाकी
बाकिर जाड़ ई अबहिन हाँकी!

सबुर धरावे
मन के लोग
भीतरे - भीतर दबावे रोग
केहू - केहू के भीतर ना झाँकी!

कुकुर सियार
जाड़ में रोवे
लेवा गुदरी जागे सोवे
बचवा बुचिया काका काकी!

जे ठंढी के
डाँटि भगावे
ऊ सेन्ही प बिरहा गावे
दमगर, मलगर, खद्दर, खाकी!

पुअरा त
जरि गइल खेत में
बाँचल जे गरुवन के पेट में
कइसे कउर जराई ढाँकी!

रोजी मजूरी
छिनलस जाड़
घर में ढुके कँपावे हाड़
कतना कबले भुजुना फाँकी!

अलुआ के
मरलस ई पाला

www.bhojpurisahityangan.com

चुपके छुपके करे ना हाला
कइसे कउड़ में अलुआ पाकी!

कइलन काठ
करेज किसान
खेतवे उनुकर जान जहान
थर-थर काँपे गींजे पाँकी!

अबहिन ससुरा
सगरे माकी
घर मड़इन में बइठी ताकी
कांटक कबले कहर ई थाकी!

गइल माघ दिन उन्तीस बाकी
बाकिर जाड़ ई अबहिन हाँकी!

www.bhojpurisahityangan.com

गंगा जी के धार में

नइखे कहात कुछो मचल हाहाकार में
सबकुछ समाइ गइल गंगा जी के धार में।

घरवा दुअरिया आ महल अटारी
मड़ई चुहान सभ गइल एके बारी
सउँसे जिनिगिया समा गइल अरार में।

खेतवा बधरिया आ गँउवा बिलाइल
गइल इसकुलिया आवाज ना सुनाइल
पुरुखन के नँउवा भुलाइल अन्हार में।

हे गंगा मइया तोहार का बिगड़नी
सुती उठी माथ नाइ पुजवा चढ़वनी
कवन चूक भइल ले गयलू मझधार में।

गइया भँइसिया आ बचवा बुतुरुआ
भइले बेघर सभ अन्न बिना उरुआ
बढ़िया में डूबल एह पार ओह पार में।

सगरे सिवानावा भइल पानी - पानी
लउके किनार नाहीं सूतल राजधानी
कांटक ना बुझाता का बा केकरा बिचार में।



www.bhojpurisahityangan.com

गंगा के अररिया

गंगा के अररिया
प्रेम के नगरिया
छलिया,
नीके करे अठखेलिया, छलिया।

एकरा ना भावे
इंद्रधनुषी नजरिया
जलिया,
ई बिछावे हलचलिया, जलिया।

निसावा पियावे
ई बढ़ावेला बजरिया
मलिया,
नाहीं पुछेला सवलिया, मलिया।

फूल मुरझाये सब
बढ़ली बेमरिया
कलिया,
तूरे सभ बिचवलिया, कलिया।

कांटक सपनवा
में देखनी पुजरिया
झलिया,
सभ बढ़ावेला बवलिया, झलिया।

www.bhojpurisahityangan.com

हई देखीं

हई देखीं जी कइसे बढ़ेला गरमिया
दिने राति एकरा में आवे ना नरमिया।

फेंड़ रुख कटाइल सभ अहरा भराइल
हरिना पियासे मूए दउरे छिछिआइल
सभका के पनिया पिआवे नवकरमिया।

एकरा के हावा देला दुनिया के दउलत
बलवा प ओकरे चलत बाटे फउकत
बमवा मिसाइल मन बढ़वलन स हरमिया।

चाहे इसराइल चाहे होखे यूकरेनवा
समराज खातिर जान मारे फेंके गेनवा
गहिरा बा राज जाने कांटक जी मरमिया।

गरमी चढ़ेला भाई - भाई से लड़ेला
सही बात केहू बरदास ना करेला
भरले बा इहे सभका में बेइमनिया।

हबस बढ़ल धन धरती के राज के
केहू नाहीं सोचे जीव, देस आ समाज के
फुटहा भुजाई, छोड़ि नीति का धरमिया।

चालीस से उपरे गाड़ेला आपन ठेहा
पहुँचे पचास प ई लवले बा नेहा
कबो रुसे फूले कबो हँसे एह दरमियाँ।

आईं भइया एकएगो फेड़वा लगाईंजा
धरती समाज देस - दुनिया बचाईंजा
सही राह चलीं छोड़ि भेदवा भरमिया।



www.bhojpurisahityangan.com

कठिन समइया

जइसे लहर तरंग उठेला
नदिया ताल तलइया में
पल - पल नव बहुरंग उठेला
मनवा के अँगनइया में!

सुन्नर सुरभित फूल देखि
हियरा में प्रीति उमड़ आवे
झुलसल झरल कँटीला तरु
खिललो हियरा के निहसावे
चढ़ल शिखर पर बर्फ गिरेला
गिर जाइला खइया में!

ज्वार उमड़ि आवेला मन में
साँच चढ़ेला फाँसी जब
झूठ मान पावेला सगरो
होला सत्यानाशी जब
अचके में पानी भर जाला
सरपट भागत नइया में!

कबहूँ भूत भविष्य कबो
आ वर्तमान कबहूँ धावे
सपनन के सपना देखलावे
ठोस धरातल ना पावे
बिछिलाला मजबूत डेग
कबहूँ अपनन के कइया में!

कलम सँघाती होले तब
कुछ टाँकि - टाँकि सुख पाइलाँ
टीस उठत टभकत घउवा के
सोचि - सोचि सुहुराइलाँ

www.bhojpurisahityangan.com

बिघिन पड़ेला तबो कबो
नीनिया में अथक कमइया में!

कांटक मनवा के हलचल के
रोक ना कबहूँ पाइलाँ
सोझा रउवा सभके अपना
मन के बात बताइलाँ
नस पकड़त दिन – रात बितेला
गुजरत कठिन समइया में।



www.bhojpurisahityangan.com

आपन अनकर

आपन अनकर जबले भेद भुलइबऽ ना
ए भइया तू तबले सद्गति पइबऽ ना।

भूखा के भरपेट खिया के खइबऽ ना
ए भइया तबले तिरपित हो पइबऽ ना।

दर्द गैर के आपन समझ बनइबऽ ना
ए भइया तू मन के दर्द, मेंटइबऽ ना।

निसहाय के मिलिजुलि बोझ उठइबऽ ना
ए भइया असली आदिमीयत पइबऽ ना।

दुख केहू के दूर करे के धइबऽ ना
ए भइया सुख में नीके मुसुकइबऽ ना।

कल छल कपट झूठ जलन दफनइबऽ ना
ए भइया इंसान सही बन पइबऽ ना।

सबका खातिर जबले कुसुम उगइबऽ ना
कांटक सरगो में सुगंध तू पइबऽ ना।



www.bhojpurisahityangan.com

माई बाबू के नेकी

माई बाबू के ना नेकिया दियाई बबुआ
चाहे करबऽ तू कतनो कमाई बबुआ।

मेहरी के कहला में छोड़ि दिहलऽ माई के
बाबू के बिसरलऽ आ भाई-भउजाई के
नीके बनि गइलऽ कलुष कसाई बबुआ।

माई के खइलका से कुछो ना ओराई
बाबू के सनेहिया ना मुअलो प जाई
दूनों मुअलो प सोचिहें भलाई बबुआ।

धरती से बड़ हउवे माई के आचरवा
सरगो से ऊँचा हवे बाबू के बिचारावा
ई बुझाई जब बनबऽ बाबू माई बबुआ।

पइसा से मति तउलऽ माई के पियार के
रूप मति धरऽ तुहूँ बड़का हतेयार के
कांटक तिरलोक में होई हँसाई बबुआ।



www.bhojpurisahityangan.com

हमहूँ झमकाईं

पिया हमरो के कीन द एगो साड़ी
हमहूँ झमकाईं आ झारीं
इहे जिनगी के लालसा बा भारी।
हमहूँ झमकाईं .....।

मउगिन के रहिया में देखीं ला रोजे
लागीला अपना जिनिगिया के खोजे
नीक लागेले साथे नर नारी।
हमहूँ झमकाईं .....।

तहरा त हर फार से ना बा फुरसत
हमरो रोपनियां सोहनिया में दुरगत
कबो - कबो जिनिगिया निहारीं।
हमहूँ झमकाईं .....।

सुख-दुख बोले बतियावे के कबहूँ
दिने राते मिले समयइया ना अबहुँ
लाली चुनरी सबुज रंग किनारी।
हमहूँ झमकाईं .....।

दुखवा में सुखवा के सोचल बा सपना
मनवा के बात बाटे मन के कलपना
सोचवे बनल बा बड़का बेमारी।
हमहूँ झमकाईं .....।

कांटक निंनरिया ना आवेले अँखिया
हमरा से कवनो ना दुनिया में दुखिया
कइसे बलमू के अपना सँवारीं।
हमहूँ झमकाईं .....।



www.bhojpurisahityangan.com

मराइल काहें मतिया

गिरल जाता सउँसे समजवा हो माई
बढ़ल जाता कोढ़वा में खाजवा हो माई।

बढ़ल जाता मेहरी के छोड़े के रिवाज हो
शदिया के बाद मुँह मोड़े के रिवाज हो
कब मिलीहें लइकिन के ताजवा हो माई।

एक त दहेजवा के मुँह विकराल हो
दोसरे अन्हरिया बिछावे रोज जाल हो
मिटल करिया मुँहवा के लाजवा हो माई।

लइकिन के कहिया ले चढ़िहें तिलकवा
गुन के गहँकिया कबले बनिहें बालकवा
कबले पुजाई लाज लिहाजवा हो माई।

पढ़लो लिखल खाली खोजेले सुरतिया
गुन नाहीं देखे कवनो जाहिल मुरतिया
पइसा प टिकी कबले साजवा हो माई।

कांटक लइकियन के होला दुरगतिया
लइकिन के पढ़ाव ना मराइल काहे मतिया
गाजवा गिरइहें कबले बाझवा हो माई।



www.bhojpurisahityangan.com

चल रे रेलिया

चल रे रेलिया ठेलम ठेल
छीपल बा कुंभे में असली खेल।

एने बा फूल - पत्ती ओने घुस्स
पागल बना दे आ क दे खुश
धरम सियासत के हवे रखेल।

मरी जे पा जाई मोकछ आ भुकुती
हाला मचा दे नीमन बाटे युकुती
निकली कचूमर तबो जाई झेल।

एह हिनुआगादह में भले पेराई
कही ना केहू से मउज में गाई
ढेर छपिटाई त पा जाई जेल।

तेली के तेल जरी केकर का फाटी
दुखवा जे झेली भगत ऊहे खाँटी
सभकुछ एही बीचे हो जाई सेल।



www.bhojpurisahityangan.com

सँइया के सजल समाज

सँइया के सजल समाज हमरा
असली भेंटाई सुराज हमरा।

बोली बिरोधी उठा लिहल जाई
कतनो चिलाई ना केनियो सुनाई
माथे बन्हाइल बा ताज हमरा।

सभ केहू संगम में जा के नहाई
भगदड़ में मरी त लसियो बिलाई
अपना धरम प बा नाज हमरा।

कवनो बेधरमी ना अब रहि जाई
हमरे पुलिसिया दल ओह के उठाई
अब कइसन शरम लेहाज हमरा।

ना कवनो डर बा ना लाज हमरा
उड़ी आकासे में बाज हमरा
बढ़िया भेटाइल बा भाँज हमरा।



www.bhojpurisahityangan.com

सँइतल सपनवा

सँइतल सपनवा में लागि गइल अगिया
सपनवा बचाईं कइसे ए सखिया
धह - धह जरे देख जोगवल बगिया
ई अगिया बुताई कइसे ए सखिया।

अगिया बुतावे गइले हमरो बलमुआ
त मरलस कसाई देख हो सखिया
हथवा में एकरा कानूनी हथियरवा
ई कइसे बदलाई बोल ए सखिया।

पीठिया प हाथ एकरा देलस धनपतिया
त ऊहे बा सहाई सुन ए सखिया
चल-चल मिलि जुलि भेदवा बताव सभ
सूतल के जगाईं सुन ए सखिया।

कांटक सपनवा बचावे के बा राह इहे
इहे बा दवाई सुन ए सखिया
अबो नाहिं बूझबऽ त फेनु पछतइबऽ
कि देसवा लुटाई सुन ए सखिया।



www.bhojpurisahityangan.com

देसवा के नसवा

देसवा के नसवा
पकड़लस बएदवा ए रामजी
बिगड़ल सभ कएदवा ए रामजी!

लउके बएदवा के
आपने फएदवा ए रामजी
होइहें सोंसवा पएदवा ए रामजी!

दिहले दवइया
सभे सोइहें निरभेदवा ए रामजी
नीके करिहें ऊ सउदवा ए रामजी!

नीनिये में देखी सभे
सरग सपनवा ए रामजी
चलिहें उनुकर दुकनवा ए रामजी!

ज्ञान विज्ञानवा के
डुबिहें सुरुजवा ए रामजी
कांटक बढ़ी सभ भेदवा ए रामजी!



www.bhojpurisahityangan.com

तनी हँसि लीहीं

रतिये से पूआ खातिर रूसल बा बलमुआ
मुँहवा प हँसी नाहीं लउके धुआँ - धुआँ।

कहनी कि गरमी बा हाथ जनि जोरीं
ताकीं तनी हमरो प दाँत ना निपोरीं
तबो नाहीं छोड़ेला ई गोदिया मजनुआ।

लोर नाहीं घोरे केहू सभ भइल तकुआ
लोगवा कहेला ई त लफुआ ह हँकुआ
पियवा कपारे हाथ ध के बनल झँखुआ।

देवरन के फिकिर नाहीं तनिको बड़का भाई के
रूप धइले बाड़न स ऊ बड़का कसाई के
पियवा के लउकेला सगरो कुआँ - कुआँ।

एगो भागल दखिने दोसरका बा उतर
अपना महल से उड़ावे सभ कबूतर
झुझुना बजावे कब फूटी नया अँखुआ।

कांटक जी बलमुआ के तनी समझाईं
भगिया में जतना रहेला ऊहे पाई
कहत रहन अपने नू हईं हम सखुआ।



www.bhojpurisahityangan.com

का बात बा अइसन

कहीं का बात बा अइसन
कि कहलो ठीक ना लागे
दू गो दुश्कर्मियन के काम, कहलो ठीक ना लागे।

कई बहिनिन क इज्ज़त से
बहुत खेलवाड़ जे कइलस,
ओकरे माथ राजा हाथ, तब चुप रहलो ठीक ना लागे।

ई कइसन तप कि मिडिया
साथ, सगरे महकमा साथे
कि सगरो फोटो भरल महल, ढहलो ठीक ना लागे।

मरत जब लूक से अदिमी
दहत जब बाढ़ में अदिमी
सकल भोंपू के आन्हरपन, चरन गहलो ठीक ना लागे।

महात्मा देखनी कांटक
मगर अइसन त ना देखनी
कि आउर बात छिपावल भा सहलो ठीक ना लागे।



www.bhojpurisahityangan.com

आइल बाड़े नेताजी

आइल बाड़े नेताजी चुनाव में
पाँच साल बाद हमरा गाँव में।

जाति हईं भाई हईं असली सिपाही
हम राउर सेवक हईं करब ना तबाही
अबकी बइठाईं अपना छाँव में।

बचि के रहब हऊ हउवे लुटेरा
झूठो फुरो बोलि के बनाई आपन डेरा
सभ कुछ करी अपना नाँव में।

तूरि के कानून सभ मनवा के करिहें
जइहें त रउवा के नीबू नीयन गरिहें
मुँहवा प ताला बेड़ी पाँव में।

काढ़ि के करेजा जल माथा प चढ़ावेले
बेचे खातिर बाचल खुचल सउदा पटावेले
सोचि लीहीं अपना बचाव में।



www.bhojpurisahityangan.com

केकरा प करहूँ सिंगार

केकरा प करहूँ सिंगार
पुरुख मोरे आन्हर हे सखिया!

सींचि-सींचि लहुआ से बगिया लगवनीं
डाढ़े पाते फूल अरु फलवा सजवनीं
चले लागल पछेया बयार
नोचत बाड़े बानर हे सखिया!

काहू नाहीं बूझे तन-मन के दरदिया
कामे नाहीं आवे दवा दारू आ हरदिया
करतानी कतनो गोहार
नोचत बाड़े बानर हे सखिया!

अन्हिया उठल एगो अँखिया मुदाइल
लोगबाग निसावा में बाड़े बउराइल
उनुके होखेला बैपार
नोचत बाड़े बानर हे सखिया!

रतिया में अजगुत देखनी सपनवा
निकले क्षितीजवा से नया सुरुज चानवा
करेले बदरिया ओहार
नोचत बाड़े बानर हे सखिया!



www.bhojpurisahityangan.com

ए दउलत के नाती

देखि के तबहिया
फाटेला मोर छाती
ए दउलत के नाती
काहे बनल बाड़ उतपाती, ए दउलत के नाती!

रोजे रोज राकेट
आ मिसाइल दगवावेल
लहुआ से धरती के
आँचर रंगवावेल
काहे बनल बाड़ मानवघाती, ए दउलत के नाती!

धरती के धनवा से
चमकत सिरिजना
तहस – नहस करेलऽ तू
मारि सभ बिजना
कइसे बचाईं सभ थाती, ए दउलत के नाती!

बचवन के कुहुँकल
मतारी के बिलपना
धुआँ – धुआँ क के सभ
बुझल ना अपना
सभके बुतवल दीया बाती, ए दउलत के नाती!



www.bhojpurisahityangan.com

होता दुरगतिया

होता दुरगतिया कइसे बचिहें इजतिया राम
रोवेले कमेरा देखीं पीटि-पीटि छतिया राम!

मिले नाहीं काम धंधा बबुआ बेमार बा
बीचे मझधारावा में बड़ी तेज धार बा
डूबे-डूबे भइल नइया निकले ना बतिया राम!

होत बा कटाव घर झोपड़ी बिलात बा
छँटनी के धार चले मन अकुलात बा
कइसे बचाईं धरती नइखे अवकतिया राम!

बुचिया कुँवारी घर में कइसे पढ़ाईं
बचवा के भेजीं खाली खिचड़ी खियाईं
मारि-मारि मतिया होता हमनी से घतिया राम!

कांटक सुराजवा के देखनी सपनवा
बाकी नाहीं बदलल जिनिगिया के पनवा
अब त छिनाला सभ सँइतल थतिया राम!



www.bhojpurisahityangan.com

हिंदुस्तान ह महान

प्यारी धरती हिंदुस्तान ह महान मोर मितवा
स्वारथ के माँगे बलिदान मोर मितवा।

मटिया में देश के लोटेले बहुते वीरवा
गोदिया में माई के भरेले मोती हीरावा
देश खातिर तेजले परान मोर मितवा।

खेतवा के सींचेले पसेनवा से अपना
सुखवा ना पावेले देखेले खाली सपना
मिलि जूलि मजदूर किसान मोर मितवा।

सीमावा प लड़े जाले उनुके दुलरुआ
छलनी बनाई देले शतरुन के छतिया
गोली खा के मरेले जवान मोर मितवा।

जब-जब जुलुमी छीनेला अधिकरवा
भारत माता तब - तब करेली पुकारवा
उठ जाग कर समाधान मोर मितवा।

जाग नवजवान तोहार हकवा छीनाता
देख बेइमनवा ऊ बइठल खाता
झूठो फूरो करेला बखान मोर मितवा।

कांटक बचाव अब देसवा के पानी
पुरुखन के गलल बाटे एही में जवानी
ना त मेटि जाई पहिचान मोर मितवा।

www.bhojpurisahityangan.com

विकास के कइसन बा नजारा

हई देख लीं विकास के कइसन बा नजारा
घर भर के लोग एक संग फँसरी लगा रहल।

ई भूख ह कि मार ह करजा के बेपनाह
माई बाबू के साथ भाई बहिन जा रहल।

पीटीं नगाड़ा खूब देश जाता चान पर
कलई त राउर खोल के घटना बता रहल।

लिचिंग के शोर बा घिनावन काम के गवाह
कतहीं बा, देशराग कि देसवे बिचा रहल।

एने बा आँखि मूँदि के भक्तन के गोल मस्त
कतहीं पहरुआ, लोग के जा जा जगा रहल।

देखनी किसान के मजूर के इहाँ तड़प
फन काढ़ि नाग झूम रहल, बा मोटा रहल।

कांटक गजब विकास बा नवही बेहाल बा
बोले अगर केहू त बा नक्सल कहा रहल।



www.bhojpurisahityangan.com

मोह

मोह घरवा दुअरावा के ना छोड़ेला
इहे जिनगी के नइया भँवर बोरेला।

बान्हि आपन आ अनकर बनरमूठ ई
असली जिनगी के सोना भसम करेला।

नेह - नाता बिलाला सवारथ बदे
प्यार के फूल असमय खिलल झरेला।

कइसे कहँवा ले अँकुरल करेजा बीचे
खाई अपनन के बीचवा बढ़ल करेला।

इहे निकले के बेरिया परनवा रोके
जीव बेचैन धधकत तड़प मरेला।

एगो पौधा बोआइल रहे नेह के
अचके मुरुझाइल हउवा लागत झरेला।

दीप ज्ञान के बुताला झँकोर चलेला
भँइसा इरिखा विवेक के सरेह चरेला।

माली लहुआ से कांटक बगइचा सींचे
लोर अँखियन से चूपे ढर्-ढर् ढरेला।



www.bhojpurisahityangan.com

बोलावे आपन गाँव

चलीं जा
बोलावे आपन गाँव
मितवा, चलीं जा बोलावे आपन गाँव।

फलगर फेंड़ लगावल सगरी मिलिहें छाँवें-छाँव
काँट कूस से डरना काहें हर दिसि ठाँवें-ठाँव
कउवा काला सबहर मिलिहें बोलिहें काँवे-काँव
मितवा, चलीं जा बोलावे आपन गाँव!

सच के दियरी बरी, ना हरदम लगी झूठ के दाव
माटी, पानी, हवा, हरियरी के ना डूबी नाँव
कामे आई इहे बखत पर करी ना भारी पाँव
मितवा, चलीं जा बोलावे आपन गाँव!

जनम भूँइ के करजा उतरी करम ना जाई बाँव
चलऽ सजाईं जा माई के बोली के गिहिथाँव
पत्थर पानी बनि जाई जब हारी नाहीं हियाव
मितवा, चलीं जा बोलावे आपन गाँव!

धीरज धरम बचाई नइया सुनिहऽ ठाँव कुठाँव
करत-करत अभ्यास से जइमति पाई जीव जियाँव
बेरि-बेरि कांटक चित चंचल इहे करे गोहराँव
मितवा, चलीं जा बोलावे आपन गाँव।



www.bhojpurisahityangan.com

गँगिया माई के पीर

रोई – रोई कहे गंगा मइया
सम्हारीं कतना लसिया ए भइया!

लहर के किनारे मइया बइठल सोचे
कुकुर सियार, कउवा लसियन के नोचे
बहे लाश जइसे अनगिन नइया!

शमशान घाट प कतार देखि लाश के
जरे बेसुमार चिता नाहीं केहू पास के
कवन बइठल बाटे निरदइया!

लकड़ी ना मिले नाहीं लोगवा भेंटाता
लसियन के फेंकि – फेंकि अपनो पराता
खोजले ना मिलेले सहइया!

अमरित नसाता हमार कोरोना के रोग से
कइसे बचाइब अपना नियरा के लोग के
कइसन समइया ई कसइया!

फूटि – फूटि रोवे मइया चारो ओरिया ताके
बहत बलकवन के मुँहवा के झाँके
कांटक देखत बड़का खइया!



www.bhojpurisahityangan.com

दलिद्दर

पीटि - पीटि के सूप दलिद्दर
भोरे - भोरे खेदाइल
देखीं लवटि दलिद्दर आइल!

घर के कोना - कोना पिटली
चूल्हा अँतरा लवना पिटली
भाग दलिद्दर इस्सर पइसे
मंतर भुनुकत दुअरा सटली
तबो ना कतो धराइल
देखीं लवटि दलिद्दर आइल!

पूरी बनल जाउर बनल
कोंहड़ा के तरकारी बनल
खूब छनाइल तेल करू में
गोधन कूटे बिटुइया सजल
भइया के बधइया खातिर
माँगर खूब गवाइल
देखीं लवटि दलिद्दर आइल!

गोबर में के बजरी गिनली
रेंगनी काँट सरपली लिलली
मूसर डंडा खोंपड़ी तुरली
सखी सलेहर झुमली मिलली
पीड़िया गीत सोहाइल
देखीं लवटि दलिद्दर आइल!



www.bhojpurisahityangan.com

माई – बाबू

माई – बाबू से ना बढ़ि के
देवता पितर हवें हो
इहे हवें सोना चानी ऊ त पीतर हवें हो!

माई के अँचरा
सरगवा के सुखवा
बबुआ खातिर ऊ सहेली सभ दुखवा
सभ तिरिथन से बढ़ि के पवित्तर हवें हो!

बाबूजी त सपनो में
राखेले आकाश में
सुखवा जुटावे सभ भुखियो पियास में
इहे देले छत्तरछाया ऊ त भीतर हवें हो!

धरती से बढ़ि के
ह माई के धीरज
बाबूजी चाहेले बबुआ बने हमार नीरज
इहे जिनिगी के दाता इहे मित्तर हवें हो!

देवता ई अइसन
कि कुछुओ ना माँगे
नेहिया, सरधवा से भाग्य सूतल जागे
उड़ि जइहें पछतइब अइसन तीतर हवें हो!

कांटक कहेले भइया
माइये के पूजऽ
बाबूजी के सेवा कर दुख उनुके बूझऽ
देवी देवता साछात ई बिचित्तर हवें हो!
इहे हवें सोना चानी ऊ त पीत्तर हवें हो!

www.bhojpurisahityangan.com

फौजी लो के हाल

बदलल फौजी लो के दुनिया
आइल अब नयका कनूनिया!

देसवा के रखिहें ऊ कइसे सुरक्षित
उनुके जिनिगिया रहल नाहीं रक्षित
देखिहें अडानी के दोकनिया!

चारि साल बाद चारो ओर छिछिअइहें
हारि पाछि उनुके चरनिया दबइहें
खोलिहें ऊहे नया कंपनिया

आन बान शान फउजी के मीटि जाई
जहँवा जइसे मन करी ओइसे खटाई
बंद होई जाई पिनसिनिया!

उनुके इशारावा प चले रजधनिया
सभके नचावे उनुकर तरजनिया
दीहें मनचाही जे वेतनिया!

सइ में पचीस के ऊ भगत बनइहें
मन के मोताबिक सभसे माला फेरवइहें
ऊहे होइहें अमर सेननिया!

कांटक कहेले जय जय जय हो भारत माता
कवना ब्लैक होल में देसवा समाता
कर तू ही अब निगरनिया!



www.bhojpurisahityangan.com

महान भोजपुरिया

खोजि - खोजि गोर वन के
लिहले खबरिया
महान भोजपुरिया
देखवले फुलझरिया, महान भोजपुरिया!

फतह बहादुर, वीर कुँवर मरदानावा
मंगल पाँड़े फाँसी चढ़ि दिहले परानवा
कबहूँ ना जुलुमिन के
कइले जी हजूरिया, महान भोजपुरिया!

बासुदेव, महादेव, सभापती, गिरिवर
जगरनाथ, अकली, रामानुज जइसन शेर नर
देश खातिर दिहले
लसाढ़ी में उमिरिया, महान भोजपुरिया!

बाइस करोड़ जन दुनिया के जानी
गाँव - गाँव कहे भोजपुरिया कहानी
चलले मिटावे जे
गुलामी के अन्हरिया, महान भोजपुरिया!

बागी बलिया के चीतू पाँड़े मस्तानावा
लोहा अंग्रेजवन से लिहले जवानवा
बोवले सुराज के
अमर चिनगरिया, महान भोजपुरिया!

कांटक लिखाई अब नया इतिहासवा
गाँवे - गाँवे लड़ल जे गवाई ओकर जसवा
झूठा इतिहास के
उड़ासी ई बजरिया, महान भोजपुरिया!



www.bhojpurisahityangan.com

चुटुकी भर सेनूर

काहें झँखत बाड़ू हमरा बियाह खतिरा
एगो चुटकी भर सेनुरा लिलार खतिरा।

खरचा जे करबू बियाह में ए माई
ओही हो खरचवा से हमें द पढ़ाई
दे द शिक्षा के गहना सिंगार खतिरा।

हमरा विवेक, बुधी, ज्ञान प भरोसा
कर मोर माई नाहीं करब कुछो ओछा
कुछ करि द तेयाग हमरा प्यार खतिरा।

बाबूजी के नीके तरी तू ही समूझावऽ
भइया के बरोबरी में मोहे पहुँचाव
खूबे चमकत हमरा लिलार खतिरा।

हमरे फिकिरिया में बाबूजी सुखइले
फूल नियन खिलल रहन काहें मुरुझइले
काहें मुइहें पइसन के बैपार खतिरा।

काहें भेजत बाड़ू मोहे अनकर कस में
पढ़ि के देखाइब करब दुनिया के बस में
करब सभकर सेवा संसार खतिरा।

बाबा कांटक के सपना बेकार ना होई
तोहार बिटिया ना कबहूँ कपार ध के रोई
होखे खातिर अपना पाँव पर तेयार खतिरा।



www.bhojpurisahityangan.com

कवना नगरिया में

कवना नगरिया में
बहली बयरिया ए रामजी
अचके भइली अन्हरिया ए रामजी।

फुटली किरिनिया कि
रुकिहें कहरिया ए रामजी
हरियर होई सभ बधरिया ए रामजी।

बड़का रहबरिया कइलस
उनुके गोड़धरिया ए रामजी
पोतलस मान प कजरिया ए रामजी।

सरम से झुँकि गइल
जन के नजरिया ए रामजी
थूके गँउवा शहरिया ए रामजी।

अपना मयरिया के
धँसली पुतरिया ए रामजी
फिर बजवइहें लोटा थरिया ए रामजी।

नाहीं मिली रोजी - रोटी
नाहीं रोजदरिया ए रामजी
फेनु से घटिहें मजूरिया ए रामजी।

कीनि लिहलस नगदे में
बड़का बैपरिया ए रामजी
रहे लोभ आ कि डरिया ए रामजी।

कांटक बुझाला नाहीं
केकर रंगदरिया ए रामजी
कइसन भइले लीलधरिया ए रामजी।

www.bhojpurisahityangan.com

बिरवा लगवनी एगो

बिरवा लगवनी एगो
भइल छितनार राम
फरल ना फूलल तनिको
भइनी निसहार राम।

गरजल बदरिया बहुते
तड़पल हजार राम
पँवरत परदेसवा गइल
कइलस बैपार राम।

सुगना सेमरवा सेवलस
कइलस बिचार राम
फरी सपनवा एक दिन
होई ऊजियार राम।

बिसधर निकलल बिलिया से
छोड़े फुफकार राम
का करीं कहँवा जाईं
सगरो अन्हार राम।

कांटक साँसत में पड़ले
भइले अलचार राम
एने ओने ताकसु केहू
नाहीं सहकार राम।



www.bhojpurisahityangan.com

कठपुतरी

नाचे कठपुतरी
नचावे कठपुतरी
आरे भइया सभके बनावे कठपुतरी!

एकर सुतरधारवा
आकाश में पताल में
सभके भेजावे ऊहे कालवा के गाल में
कबो ढीले कबो खींचे ऊहे एकर सुतरी।

ओकरे अँगुरिया प
बाटे एकर खेला
ओकरे के शुभ लाभ देला अउरी लेला
अँखिया के ओकरे ई हवे प्यारी पुतरी!

किसिम - किसिम के
ई खेलवा देखावे
झूठ साँच जूध करे सभके फँसावे
गिरि जाई परदा त मंचवा से उतरी!

जब ले बा हावा
मारे सभका के लँगी
कटि जाई धागा गिर जाई ई तिलँगी
छूटी इतराइल एकर उड़ि जाई चिथरी!

हरदम मउजे में
उड़ेला अकासे
धरती तड़पि मरे भूखे पियासे
कांटक सपनवा के कबले ई कुतरी!
नाचे कठपुतरी नचावे कठपुतरी!



www.bhojpurisahityangan.com

ठगवा नगरिया

इहे ठगवा नगरिया लुटलस हो!
सभ रखवारन के कुटलस हो!

चकमक देखलवलस विकास के
बोअलस बीया सभ विनाश के
मंतर मरलस धरम-करम के
सभ चोरवन के पोटलस हो! इहे ठगवा .....

देश दोहाई गावत दउरे
मेल मोहब्बत हर पल खउरे
भजन अजान के खींच देवलिया
इंसानन के बँटलस हो! इहे ठगवा .....

गजब नाज नखड़ा देखलावे
तूरे तान आ रोवे गावे
पीटलस ताली एक हाथ से
सकल हरियरी खुटलस हो! इहे ठगवा .....

पूरब कहे पछिम के धावे
मुरदन के हर रोज जियावे
बंद करे आवाज समय के
धन निरधन के ठुँसलस हो! इहे ठगवा .....

चिंता बा इतिहास के मन के
आम छोड़ि के खास के धन के
कांटक सुनत कबीर बाबा के
सभ धन धरती झिंटलस हो! इहे ठगवा .....



www.bhojpurisahityangan.com

ए भइया

चिरईयन के जान जाता कुहुँकत ए भइया!
शिकरिया के बान नइखे लउकत ए भइया!

न जाने कहाँ से अन्हरिया ई आइल
सभे बाटे घरवा में अपना लुकाइल
तनिक ना निदरदी बा चउँकत ए भइया!

ना जिनगी बचावे के कवनो उपइया
घुटत साँस सगरो देखत बाबू मइया
तखत मद में अपना बा छउकत ए भइया!

बा बिलखत आ तड़पत मरद मेहरारू
दूहत बाटे रजवा ई गइया दुधारू
उजड़ि जाता खोंतवा ऊ फउकत ए भइया!

कहाँ आक्सीजन कहाँ बा दवइया
बजावेला गाल थोंथा चमकावे नइंया
सड़कियन प डंडा से हँउकत ए भइया!

ना अपनन के अंतिम दरस केहू पावे
ना मुँहवा में तुलसी गंगाजल डलावे
बा अनगिन चिता साथे धधकत ए भइया!

कहाला ना कांटक गजब ई कहानी
बढ़त महामारी में काटत के चानी
देखवला प रहिया ऊ भँउकत ए भइया!



www.bhojpurisahityangan.com

हमरी नगरिया

हमरी नगरिया
के चिकनी डगरिया
कवन मदरिया नजरिया लगावे
हमरी नगरिया .....।

जदुआ देखावे
मुआ जाल फइलावे
चहकत चिरइयन के जाल में फँसावे
हमरी नगरिया .....।

जहर पियावे
जालिम मति भरमावे
कांटक नगरिया कहर बरपावे
हमरी नगरिया .....।

मोरनी के नोचे
पाँखि बँसुरी बजावे
डगर - डगर नाच नंगा नचावे
हमरी नगरिया .....।

www.bhojpurisahityangan.com

नाही लागेला मनवा

उजरेला सगरे सपनवा हो
नाहीं लागेला मनवा!
बिसरल जिनगी के गानावा हो
नाहीं लागेला मनवा!

जिनगी कियरिया के सूखल पनिया
सही राह छोड़ले जे काटि रहल चनिया
घेरलस भेंड़िया सिवानवा हो
नाहीं लागेला मनवा!

दउरेला घोड़ावा कागजवा प खूबे
अजबे बा राज आउर रजवा अजूबे
जेहले में सूरुज आ चनवा हो
नाहीं लागेला मनवा!

कवन दो फुलवा के गमक चोरावे
भँवरन तितलियन के फाँसी प चढ़ावे
रोजे-रोज उजड़े चमनवा हो
नाहीं लागेला मनवा!

कांटक अन्हरिया में राति भर जागे
तबो ना अँजोरिया के छोर हाथे लागे
काटे धावे अपने भवनवा हो
नाहीं लागेला मनवा!



www.bhojpurisahityangan.com

कहँवा से आ गइल

जेही बोवे रोज काँटा
ऊहे लोढे रोजे फूल
भइया कहँवा से आ गइल ई नयका वसूल!
भइया ....

पढ़ि-पढ़ि माथा खपतान
ऊहे भइल हलकान,
मेवा चाभे लोग ऊहे जे ना गइल स्कूल!
भइया ....

नेकी के ना बा गुजारा
बदी पावे गद्दी प्यारा
झूठ चढ़ल बा कपारे साँचा पँउवा के धूल!
भइया ....

पोरे - पोर बा कमीशन
बा दलाली सही मिशन
रोजे लड़तिया रेल रोज ढहे देखीं पूल!
भइया ....

मारे, रोवहूँ ना देवे
सभ कमाई छीनि लेवे
ताली थाली संग बाँटे तलवार तिरशूल!
भइया ....

कांटक होजा सावधान
सभ टूटल अरमान
आपन लिखिया लगलका ना जइह तू भूल!
भइया ....



www.bhojpurisahityangan.com

हम का करब

आपन सरेह साँढ़ भँइसा से चरावेलऽ, चराव, हम का करब
मुद्दई से आगि लेके आपन घर जरावेल, जरावऽ, हम का करब।

हम त चहनी कि तहरा खातिर कुछ करीं बाकिर
तू ही जब हमरा के दुश्मन बतावेलऽ, बतावऽ, हम का करब।

देखवनी राह बहुत बचे के काल से हर रोज बाकिर
खुद ब खुद तू मुँह में काल के समावेलऽ, समावऽ, हम का करब।

अन्हरिया रात में जरवनी टरच तहरा खातिर बाकिर
तू ओनहीं आँखि मूँदि धावेलऽ, धावऽ, हम का करब।

दलदल से निकाले खातिर तहरा के, हम खुद दलदल में धँसनी बाकिर
तू ओही में सुख चैन पावेलऽ, पावऽ, हम का करब।

कतने लोगन के आँखि के किरकिरी बननी तहरा खातिर कांटक
तू ओही लोगन के पलकन में बइठावेलऽ, बइठावऽ, हम का करब।



www.bhojpurisahityangan.com

दुखी मन के उद्‌गार

हतेयार बनल बा हो
हतेयार बनल बा हो
हतेयार बनल बा!
कइले बा करोना धुआँधार
ऊ कइसन रखवार बनल बा!

रोज – रोज मरे लोग मिले ना दवाई
उनुका चढ़ल भूत कइसे जीत जाईं
राजा जी के नीक बैपार बनल बा हो!
हतेयार बनल बा!

उनुका निशानावा प देश के तखतवा
देसवा के लोग चाहे जीये के मरतवा
मउवत के इहँवा बाजार बनल बा हो!
हतेयार बनल बा!

माई, बाबू, बेटा, नाता, हितवो लाचार बा
केहू के ना भीरी जाये मितवो बेमार बा
सभकर दशा तार-तार बनल बा हो!
हतेयार बनल बा!

कांटक ई दुखवा ना कहले कहाला
देखि सुनि फाटेला करेज ना रहाला
कइसन राजावा हमार बनल बा हो!
हतेयार बनल बा!

हतेयार बनल बा हो! हतेयार बनल बा हो!
हतेयार बनल बा!



www.bhojpurisahityangan.com

अचके एगो बात कँउधल

बड़ घर में
जनमल बाड़ऽ
दूध मलाई खोआ खा
छोट घर में
भइल जनम त
तू कटहर के कोआ खा।

छोट घर में
जिनगी काटऽ
कँहरऽ काँपऽ मड़ई छा
अवतरलऽ
बड़का घरवा में
नाचऽ गावऽ गोवा जा।

बड़ घर के
आसन बड़हन
अगरा चंदन चोवा पा
छोट घर के
के पूछेला
सेवा करऽ दोवा पा।

कांटक मुअऽ
पराये फिकिरे
सगरे साँप के पोआ बा
कान्ह प चढ़ि
जे ऊपर गइले
देवे मूड़ी चढ़ौवा जा।



www.bhojpurisahityangan.com

बोलीं राम राम

जनवा गरीबवन के
सहते बिकाय बोलीं राम-राम!
जतिया के बतिया ना मनवा से जाय, बोलीं राम-राम!

चाहे हो कलक्टर
चाहे हो मजिस्टर
दलित दमित चारो ओर से घेराय, बोलीं राम-राम!

हतेया भइल बा
कानूनी अधिकारवा
जाने जनतंतर कहँवा भुलाय, बोलीं राम-राम!

देशघाती जनघाती
राष्ट्रभक्त होइहें
कुरुसी सँघतियन के पापवा छिपाय, बोलीं राम-राम!

चोर चोर भइलन
भाई मउसेरा
कांटक देखेले सभ दाव के उपाय, बोली राम-राम!



www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी कविता के शेषांस

झुंड चलल बझवन के
पा के नीमन इशारा
घेरि घारि मुरुगा के मरलन स ऊ सारा
कहलन राजा माँग
अरे अब अँठई झरल।

सुतलन जब रतिया में
उनुका गजब बुझाइल
अनगिन मुरुगन के कुकडू कू फेरु सुनाइल
चढ़ल जिउवा चाँग
अरे ना आफत टरल।

मनवा भइल झवान
कि कतनन के मरवाईं
करे खातिर कैद जेल कतना बनवाईं
नियरा कवन सवाँग
पिहीं अब कतना गरल।

राजा रहन बेहोस
साँस अब रहे टँगाइल
चिचिअइलन खूबे ना केहू भीरी आइल
पूरल उनुकर माँग
कि कांटक जहर ना फरल।
मुरुगा दिहलस बाँग .....

www.bhojpurisahityangan.com

ए बाबा

कतने भवनवा तुरबऽ ए बाबा
कतने लोग के मरबऽ
कतने आवाजवा प मरबऽ हो ताला
कतने घर उजड़बऽ!

तोहरो बुलडोजरवा ए बाबा
तहरे नाशवा करिहें
हरदम रही ना अन्हरिया ए बाबा
लोगवा दियना बरिहें!

कतने जुलुमिया अइलें ए बाबा
कतने जुलुमी गइलें
कतने लगवलें मुँहकरखी ए बाबा
मुँहवा करिया भइले!

अबहूँ से अगिया बुतावऽ ए बाबा
नगरी के बचावऽ ना
घरवा के जारि जुरि रखिया ना करऽ
दुश्मन के मत बोलावऽ ना!

घरवा ई ह सरगवा ए बाबा
झुर-झुर बहे बयरिया
किसिम-किसिम के सुगंध भरेला
फुलवा खिले रंग जहरिया!

कवन भुतवा सवार तोपे बाबा
कवन देखेलऽ सपनवा
छोड़ि के जइबऽ धरतिया ए बाबा
स्थिर कर आपन मनवा!

www.bhojpurisahityangan.com

मान मोर परथना ए बाबा
मत जियरा तड़पावऽ हो
एही रे हूके मरेले कांटक भइया
मत लोगवन के सतावऽ हो!

www.bhojpurisahityangan.com

बुनियादी ममिला

हमरे राजा जी त कइले हलकान
कइसे होइहें निदान
जवन बाटे बुनियादी ममिला!

कतो बुलडोजर चलावे
कतो जन के तड़पावे
कतो धड़-धड़ के मारे केहू के जान
कइसे निपटी बुनियादी ममिला!

बसे मंदिरे में जान
करे झुठही बखान
साँच कहला प देले जेलखान
फेंकरेले बुनियादी ममिला!

खोजे रोज एक बहाना
भइले हिटलर के नाना
लिहले धरमे के आपन सीमा मान
कइसे सुलझी बुनियादी ममिला!

लवले बोललो प रोक
तंत्र शाही ह कि लोक
अपना गोड़वा त धइले संविधान
कइसे होइहें निदान ममिला!

बढ़े रोज बरोजगारी
महँगी भइल फणधारी
तबो सूतल बाड़े नशा में जवान
कइसे बँचिहें आजादी ममिला!

www.bhojpurisahityangan.com

बोवे नफरत के बीज
कहे प्यार का ह चीज
रूप छने - छने धरे बे ठेकान
परल सभ बुनियादी ममिला!

कांटक राजा जी के लाज
नाहीं शरम तनिको आज
कहे धरती प आई अब चान
कइसे धरती के बाँची ममिला!



www.bhojpurisahityangan.com

कटेला

सोना चानी कटेला हो
सोना चानी कटेला
केकर देसवा ह केकर सोना चानी कटेला
एने छछनत जिनगी किसानी कटेला!

देसवा त हउवे मजदूर के किसान के
फउजिन के हवे ई त हवे नौजवान के
जेकर लथपथ में जूझत जवानी कटेला!
एने तड़पत जिनगी किसानी कटेला!

भोटवा से जेकरे ऊ भइले परधानवा
कान्हवा प चढ़ि के हो गइले महानवा
एने सोचते-सोचत जिनगानी कटेला!
एने जहर पीयत में किसानी कटेला!

धन बल छल से जमा के अधिकारवा
कबजा जमा के करे भारी अत्याचारवा
उनुकर मुँहवे के जोर प फुटानी कटेला!
एने फँसरी लगावते किसानी कटेला!

जनता के धनवा से उड़ेला विमानवा
आकाजी के उनुका पुरेला अरमानवा
उनुके नोटिया प पँउवा सिरहानी कटेला!
एने करजे में हुटुकत किसानी कटेला!

रतिया देखावे उनुके रोज रंगरेलिया
सुलझे ना जिनगी के एनिया पहेलिया
एने लथपथ पसेना से पेशानी कटेला!
एने बोडरो प लड़ते किसानी कटेला!

www.bhojpurisahityangan.com

सभ सुख परोसेली ई धरती जे माई
फूटि-फूटि रोवे कइसन बेटावा कसाई
गावे सेन्हियो प बिरहा जुबानी कटेला!
कांटक कतना ले गुनवा बखानी कटेला!
केकर देसवा ह केकर सोना चानी कटेला!



www.bhojpurisahityangan.com

देख-देख भइया

देख-देख भइया
भागल महँगइया
पीटींजा ताली थाली, नाचींजा ता ता थइया!

चाउर दाल आटावा प
जी.एस.टी. लदाइल
दहिया, पनीर, पावभाजी गरमाइल
आगे पाछे सगरो खोनाए लागल खइया!
भागल महँगइया .....

होटल अस्पताल
अब तहरा खातिर नाहीं
बड़का लोगन खातिर होत बा उगाही
तहरा दुलम होई जीये के दवइया!
भागल महँगइया .....

कागज, किताब, कॉपी,
कटर सियाही
सभका प जी.एस.टी. के होई अब उगाही
खतम करे खातिर बा गरीब के पढ़इया!
भागल महँगइया .....

एह महँगइया के
बाप ह कसइया
केकरा से डर कोतवाल बाड़े सँइया
एगो डालर खात बाटे अस्सी गो रुपइया
भागल महँगइया .....

हाय दइया हाय दइया
करे बाबू भइया

www.bhojpurisahityangan.com

बेहुँड़ी सजाव दही खइलस बिलइया
बीच मजधारे डूबे देसवा क नइया!
भागल महँगइया .....



www.bhojpurisahityangan.com

भाई बड़ मनई बनी

मनवा में पलनी गुमान
कि भाई बड़ मनई बनी
झोकनी कमाई जीव जान
कि भाई बड़ मनई बनी।

काटि-काटि पेटवा
जरूरत पुरवनी
सकल कलेश पीर
कपरा प लिहनी
पलनी आकाशे अरमान
कि भाई बड़ मनई बनी।

सुनलीं ना एकहू
मेहरिया के बतिया
छतीसे में बीतल
जवनिया के रतिया
मूँदि लिहनी आँखि अउर कान
कि भाई बड़ मनई बनी।

अचके में टूटि गइल
पोसल सपनवा
चढ़ले आकाशे त
आइल कुदिनवा
हो गइनी मछिया समान
कि भाई बड़ मनई बनी।

बंद बोलचाल भइल
बंद देखा-देखी
रिश्ता आ नाता के

www.bhojpurisahityangan.com

कवनो ना लेखी
फुरमावे जा तू श्मशान
कि भाई बड़ मनई बनी।

कांटक समइया के
इहे परताप बा
बाप बनल बेटा आ
बेटा बनल बाप बा
चरचा बा सउँसे जहान
कि भाई बड़ मनई बनी।



www.bhojpurisahityangan.com

कइसे का कहीं

केकरा से कइसे का कहीं ए काका
फँसल बाटे चाका, तू मार ना धाका।

मनवा ना लागे बा अइसन धुआँइल
घेरलस अन्हरिया ना रहिया बुझाइल
अजबे खिंचता नगरिया के खाका।

अइसन बहल बा हवा झँकझोर के
रहब सजग ना त जइब सभ ओर से
जेकर हवा ह मारे चउका छाका।

चोरवा चोरावे बा बन्हले चउरि के
छोपनी लगवलस ना भगब दउरि के
दिनहीं दहाड़े ऊ डालेला डाँका।

सगरो बँटाला मिठाई धरम के
कवनो दवाई ना अइसन भरम के
तोपले बा दिल्ली देखावेला ढाका।

बनी भविस कइसे बबुअन के
कब्जा करावे लगुअन भगुअन के
ओकरे अँजोर जेकरा भीरी बा टाका।

धरत अँगुरिया ई धइलस कलाई
पलखत पाई धरी गरदन दबाई
करत बा बंद देख सभ नाका-नाका।

गंगाजी के धरती प नफरत के दलदल
बढ़ता हर पल आ मचल बा हलचल
दलदल के मालिक लगावे ठहाका।

www.bhojpurisahityangan.com

रहबऽ तू फाँका बनी ओकर पाका
चाका प बइठल इयार ओकर बाँका
छपले जाता कांटक सउँसे इलाका।



www.bhojpurisahityangan.com

नेह - नाता

रुसि जाइला त हमके मनावे बालमा
हो मनावे बालमा!

मीठी बतिया से मोहे फुसुलावे बालमा!
मारि बोलिया के गोली
पिया करेले ठिठोली
नाहीं अइसन चोन्हाइल
चढ़ि के अइनी जबसे डोली
नाहीं हँसीला त हमके गुदगुदावे बालमा
हो मनावे बालमा!

ई ह कइसन नेह नाता
जोरि दिहले बिधाता
बोलि दीहींला कबो त
नाहीं चले देवे पाता
खूबे लूका-छीपी क के भरमावे बालमा
हो मनावे बालमा!

राति नीनि नाहीं आवे
जबले घरे नाहीं आवे
जिया धुकुर-धुकुर करे
उनुके याद तड़पावे
चोला चिरई बेकल कइसे पावे बालमा
हो मनावे बालमा!

कबो अँखिया देखावे
कबो झुलुआ झुलावे
कबो सपना देखावे
कबो फूल गमकावे

www.bhojpurisahityangan.com

कबो सुतले में अचके जगावे बालमा
हो मनावे बालमा!

आँखि - आँखि से मिलेले
खीसि गते से उड़ेले
एगो मुसुकी प जाने
कइसे अमरित झरेले
कांटक झट देना छाती से लगावे बालमा
हो मनावे बालमा!



www.bhojpurisahityangan.com

काहें भइल ई बवाल

रेंगनी पर टँगल बाटे
बड़का सवाल। काहें भइल ई बवाल।

देसवा के लाल गइलें
कलवा के गाल। काहें भइल ई बवाल।

रचना ई केकर हवे
केकर ह ई चाल। काहें भइल ई बवाल।

असली मुदइया
भइल मालेमाल। काहें भइल ई बवाल।

कवन दुसमनवा
बिछवलस ई जाल। काहें भइल ई बवाल।

चिंटुआ बजवलन स
झूठों फुरो गाल। काहें भइल ई बवाल।

भगता बजवलन स
नीके तरी गाल। काहें भइल ई बवाल।

मौसम से पहिले बाजल
सुर ताल। काहें भइल ई बवाल।

आका जी के काका जी के
गल गइल दाल। काहें भइल ई बवाल।

केहू के धोआइल माँग
केहू मालोमाल। काहें भइल ई बवाल।

केहू के मराइल पूत
केहू ठोके ताल। काहें भइल ई बवाल।

www.bhojpurisahityangan.com

हतेयरवन के बा
कवनो ना मलाल। काहें भइल ई बवाल।

राज के बा बात कवन
कही माई के लाल। कांटक भइल ई बवाल।



www.bhojpurisahityangan.com

दुखवा गरीब के

दुखवा गरीब के ना कहले कहात बाटे
बाते-बाते जबरा के लात जूता खात बाटे
बचवा बुतुरुआ के सोझा गीरे लाठी डंटा
ताके टुकुर-टुकुर ना छोड़ावे केहू जात बाटे।

जात-पात नान्ह जानि खीस बढ़ि जात बाटे
जोर कमजोर प ना तनिको थटात बाटे
अइसन समाज ई सुराज केकरा के मिलल
सगरी दबंगवन के बढ़ल उत्पात बाटे।

कहे के त सभके बराबरी के हक मिलल
उपरे ऊपर लोकतंतर के फूल खिलल
पनिया के भीतरी कवन खेल होखे रोज
छोटकी मछरियन के देखे लोग रोजे लीलल।

मउगी गरीबवा के सभकर ह भउजी
काटि लेवे एक काटा जइसे कलउँजी
मरदा ओकर देखे बोले ना सबद एको
बोली जदि लात खाई केनियो ना गँउजी।

खेतवा बधार नाहीं रोजी रोजगार नाहीं
जाँगर ठेठाई कहाँ देखी सरकार नाहीं
सगरे बिगहटा बा जबरे के पसरल त
पूँजी पाटा मिली कहाँ कवनो बैपार नाहीं।

कम खाके गम खाके चुपे महटिया के रहे
करजा गुलाम काढ़ि सूदिया के बोझ सहे
जाई कहाँ पिजड़ा से बहरी कवन बिधि
नलिया के पानी नीयर ओकर इज्ज़त बहे।

www.bhojpurisahityangan.com

नमवा बिधाता के बा सुमिरत दिने राति
अपना सरग से ना उतरे ऊ कवनो भाँति
कांटक अथाह में अन्हार रात काटे लोग
कटले कटात नाहीं कवनो बिधि जात पाँति।

लड़े बदे कवनो हथियरवा ना बाटे हाथे
कहे के बा सभ साथे बाकी नाहीं केहू साथे
अपने में सभ मशगुल रहे बाले बच्चे
सगरी से बहि दुख गिरत बा खुदे माथे।



www.bhojpurisahityangan.com

जाने काहें दो त

जाने काहें दो त
बाबूजी के आवेला इयाद
जाने काहें दो त।

कहलें एक दिन अइसन आई
केहू के बोले ना दिआई
तबो केहू जे जिदिआई
सभ मसीनवे बन हो जाई
रोवत तड़पत कसमस करत लोगन
के के करी फरियाद
जाने काहें दो त।

होई जनतंतर के अंत
बनिहें करोड़पति सभ कंत
मचिहें खूबे कचरमकूट
होइहें बाघ बाज श्रीमंत
मुँहवा बवले दाँत पिजवले
लउकी उनुके सगरो माँद
जाने काहें दो त।

बोली केहू कवनो साँच
तुरते आई उनुपर आँच
जइहें लालघर के भीतर
नाहीं केहू जाई बाँच
अँखिया मीसत लोरवा पोछत
लउके लागी सगरे चाँद
जाने काहें दो त।

होई सगरे फेल बिधान
छेड़ी राजावा अइसन तान

www.bhojpurisahityangan.com

धीमा जहर दिआई सभके
जे ना मानी ओकर शान
हारी हूरी जीती थूरी
लीही सभके सभ जायदाद
जाने काहें दो त।

भरपेट भोजन ना भेंटाई
कइसे लेबऽ तू लड़ाई
करबऽ हाय सातू हाय सातू
ऊहे मुक्तिधाम पहुँचाई
जहँवा आपन अनकर देस
दुनिया आई ना इआद
जाने काहें दो त।

कांटक करब का कविताई
केहू के कामे ना आई
भाई – भाई के लड़वाई
सभका के सभसे अझुराई
तबे भेस बदलले लउकी
तहरा हिटलर के औलाद
जाने काहें दो त।

जाने काहें दो त
बाबूजी के आवेला इआद
जाने काहें दो त।



www.bhojpurisahityangan.com

दरूइया रे

दरूइया रे
अबहिन का का करवइबे
सुन्नर प्यारी मेहरिन के कबले मरवइबे
कबले पिटवइबे
कबले खदेरवइबे
दरूइया रे .....।

बिक गइल खेत बारी
बिकल जमींदरिया
घरवा मकान बिकल, बिकल लोटा थरिया
कतना मेहरियन के बन्हकी धरवइबे
दरूइया रे .....।

कइले कतने
बबुअन के जिनगी बेकार रे
माटी में मिलवले सभ रोजी रोजगार रे
कतने निक बबुनियन के घर छोड़वइबे
दरूइया रे .....।

निक-निक अदिमियन के
नाली में गिरवले
पागल कुकुरन से ओकर मुँह चटववले
गइल गुजरल लोगवन से गारी सुनवइबे
दरूइया रे .....।

सभ गति भइलो प
लोगवा ना चेते
बाल-बाचा माई-बाबू बूड़ले समेते
लाज-शरम धरम-करम सभ छोड़वइबे
दरूइया रे .....।

www.bhojpurisahityangan.com

बढ़ल जाता रोज-रोज
नशा महामारी
गाँजा, भाँग, दारू आ हिरोइन के खुमारी
कब ले बैपरियन के आकाश प चढ़इबे
दरूइया रे .....।

जब ले लागल
तोहरा प बाटे पहरा
तब ले हो गइले तें अउरी बेबहरा
कांटक भीतरघात क के कब ले तें मोटइबे
दरूइया रे .....।



www.bhojpurisahityangan.com

मायापुर नगरिया में

मायापुर नगरिया में
लाई के बजरिया हो
कमरिया ओढ़ि के ना,
घीउवा पियेला मदरिया हो, कमरिया ओढ़ि के ना!

ओढ़ि के कमरिया
बजावेला बँसुरिया हो
अँजोरिया कहे ना
सगरो फइलल बा अन्हरिया हो, अँजोरिया कहे ना!

कतने बजवलस
घरी घंटा थरिया हो
दियरिया बारि के ना
ऊ खेलवलस घुमरिया हो, दियरिया बारि के ना!

घरवो में छुपुकल
लागे खूबे डरिया हो
दुअरिया छोड़ि के ना
निकले केहू ना बहरिया हो, दुअरिया छोड़ि के ना!

अपनो बिराना भइल
दूरे नरवा नरिया हो
पँजरिया दलके ना
नाहीं केहू धरहरिया हो, बेमरिया अइसन ना!

कतहूँ से निकले ना
कवनो चिनगरिया हो
बधरिया बनवा ना
भींगल गँउवा शहरिया हो, लहरिया फइलल ना!

www.bhojpurisahityangan.com

कांटक के लउकेला
सगरो करिया-करिया हो
नजरिया फेरले ना
नाहीं लउकेला डगरिया हो, नजरिया फेरले ना!



www.bhojpurisahityangan.com

जाल बिनींला झीनी

हम त बड़का से
हाथ मिलवनी हो
छोटका के का गीनी!
जबे जवने चाहीं बेचीं कीनीं हो
जाल बिनींला झीनी!

मारीला नीके
आ रोवहूँ ना दीहीं
जब चाहीं जेकरा ले
सभ छीन लीहीं
चाहे रूसे फुले रूसी चीनी हो
जाल बिनींला झीनी!

कर दिहनी
घरवे में लाचार सभके
फुलवा लगवनी
ना केहू के गमके
लीहीं सभके सुगंध हम तीनी हो
जाल बिनींला झीनी!

हमरा से बड़का
जे बनिहें सपूतवा
तुरते पेठाइला
आपन जमदूतवा
जाई सरगे बनी चकरघीन्नी हो
जाल बिनींला झीनी!

सुन लेहू देसवा के
लोगवा बेचारा

www.bhojpurisahityangan.com

बैपारी, खेतिहर,
मजूर, सरबहारा
सूति जाहू सभे गहीरा नीनी हो
जाल बिनींला झीनी!

कांटक के कवरा
कुकुरवा के दिहनी
भूँके जे ओकरा के
कबजा में लिहनी
काहें करे हमार तौहीनी हो
जाल बिनींला झीनी!



www.bhojpurisahityangan.com

हई देखऽ हो

पाँच किलो अन्न दे के
करे छेड़खानी
हई देखऽ हो कतना करेला मनमानी
हमनी से भोट लेवे
हित भइल अडानी
हई देखऽ हो करेला कसइया खीचातानी।

कोल्हुआ चलावे डाले
हमनी के घानी
हई देखऽ हो अपने काटेला कइसे चानी
खूनवा खीचेला रोज
दान करे पानी
हई देखऽ हो कइसे बनेला छलिया दानी।

कहेला कि सभका के
साथे हम बानीं
हई देखऽ हो बेचलस देस राजधानी
पनिया में बूड़ि के
पीयेला खूब पानी
हई देखऽ हो कहे उपवास हम बानी।

बेरि-बेरि कहेला
बिकास करत बानीं
हई देखऽ हो शुरू बा बिनास के कहानी
केहू के उजाड़े
छीने केहू के जवानी
हई देख हो कतना बोलेला मधुरी बानी।

फारे इतिहासवा
मेटावे बलिदानी

www.bhojpurisahityangan.com

हई देखऽ हो बदले आजादी के कहानी
कांटक जिनिगिया
भईल पानी - पानी
हई देखऽ हो पीयर भइल सभ रंग धानी।

आँखि खोल देखऽ तनी
हम देखावत बानीं
हई देखऽ हो देसवा बनावे चूहादानी।



www.bhojpurisahityangan.com

पियासल आत्मा

कहँवा होइहें सुगनवा हमार मैना
मन तरसे निरेखि लेतीं भर नैना।

सोचनी बुढ़ाइब खेलाइब नाती - पोता
बबुआ खदेर देले घर से अलोता
कबहूँ बोलनी ना उनुके रुखर बैना।

काहें नजरिया से करि दिहले दूर हो
कबहूँ ना उनुका के कइनी मजबूर हो
जेकरा खातिर गँववनी सकल चैना।

देखि - देखि मुनवा के नयना जुड़इतीं
मुनिया के माथ झार मनवा अघइतीं
नाहीं कटेला दिनवा ना कटे रैना।

राते दिन नैना से ढरताटे नीर हो
कइसन बिधाता बनवले तकदीर हो
छूटल खोंतवा टहनिया टूटल डैना।

खोंतवा में चिरईं सुतावे आपन बाचा
खा गइनीं हम एह बुढ़वती में गाचा
सभे भरल बा कहींला केहू है ना।

बुढ़ऊ परा गइले हमरा के छोड़ि के
बाल बाचा खातिर ना रहले अगोरि के
घरवा ले चलिते मोहिके देखइते मैना।

मुन्नी हो दादी के मत तू भुलइहऽ
मिले खातिर दादी से कबो - कबो अइहऽ
नाहीं त कबहूँ ई उड़ि जाई मैना।

www.bhojpurisahityangan.com

अन दाना ढूके ना दिन - रात रोईं
केकरा खातिर अब जिनिगिया के ढोईं
सुनीं कांटक जी बबुआ से करीं सैना।
मन तरसे निरेखि लेतीं भर नैना .....।



www.bhojpurisahityangan.com

खटाई

हमरा नीक नाहीं लागे
ई खटाई तनिको
नाहीं कबो करी केहू के भलाई तनिको।

मिलि-जुलि लड़नी आजादी के लड़ाई
रहनी जा मिलि-जुलि जइसे भाई-भाई
काहें बीचे केहू भेदवा बढ़ाई तनिको।

मिलि के बनवनी जा महल अटारी
सींचि के सजवनी जा नीमन फुलवारी
काहें लहरत फुलवारी उजड़वाई तनिको।

बहे एह लहरिया प जमुना आ गंगा
लहर लउके दूगो बाकिर मनवा बा चंगा
काहें केहू एह में अगिया लगाई तनिको।

हमरा त इन्दरधनुस मनवा के भावे
बैनीआहपिनाला सातो रंग मिलि जावे
काहें केहू तूरि-तारि डेरवाई तनिको।

अँवटल दूध भइल सोन्ह लाल लाले
कवन दुसमन एमे खाटा रस डाले
फाटि जाई दूध मिली ना मलाई तनिको।

बेदवा पुरान चाहे बाइबिल कुरान हो
सभकर कथनी कि एके भगवान हो
काहें नमवा प उनुका बँटाई तनिको।

मनवा में जेकरा समाई ई खटाई
उल्हि मेल्हि लेसि दीही घरवा बँटाई

www.bhojpurisahityangan.com

आई आफत त नाहीं सम्हराई तनिको।
हउवे खटइया सूरनवा के चेटी
हाथ गोड़ काटेला जे काटेला नरेटी
काटी भीतरे-भीतर ना चिन्हाई तनिको।

कांटक कहत प्रेम जिनगी के सार हो
एकरे से सभे होई जाई भव पार हो
काहें स्वारथ में केहू निज नचाई तनिको।



www.bhojpurisahityangan.com

बाटे बबुआ अकेल

बाटे बबुआ अकेल
नाहीं कवनो नकेल
जेने मन करी हवा में पतइबे करी
लाट खाई त लटाई के सतइबे करी।

करी कुछो ना कमाई
सभ बेचि – बेचि खाई
माई बबुओ के रोज कुहकइबे करी।

जब आई मेहरारू
पी के गाँजा भाँग दारू
मारी पीटी करी पारू सँड़सिअइबे करी।

खूबे करी मनमानी
नाहीं केहुए के जानी
खाइब जहर भा सुसाइड धमकइबे करी।

खेत चींड़ी चूगि जाई
माई बाबू पछताई
जाई कुफुते में जान डेरवइबे करी।

जेकरा परल बा कपारे
ऊ त नीके जानतारे
खूबे देला के दुलार फल पइबे करी।

बढ़ल जाता ई बेमारी
सभके धरी पारापारी
ना त कसींजा लगाम धधकइबे करी।

www.bhojpurisahityangan.com

केहू बाटे त बचावे
मारे, अँखियो देखावे
आजु ना त काल्हु रउओ प अइबे करी।

साँप छुछुनर के हाल
कइले बाटे पैमाल
कांटक केकरा से कही कसमसइबे करी।



www.bhojpurisahityangan.com

हाय पुनरबस

हाय पुनरबस! हाय पुनरबस।
तूहूँ हो गइल उनुके बस
तूहूँ धोखा देब का जी
तब कइसे घर घंटा बाजी?

सत्ता सुख में त ऊ गइले
पूँजी के गोदी में समइले
कतना माल दबवले बाड़न
कि ईडी के डरे डेरइले
कि कुरसी के मिलल बा रस
हाय पुनरबस! हाय पुनरबस!

रोहिणी त ना रूप देखवलस
मृग डाहो त खूब सतवलस
अदरा के घर भदरा लागल
जाने कुरसी का का खइलस
माया नगिनिया सभके डसलस
हाय पुनरबस! हाय पुनरबस!

बीजड़ बुढ़ा रहल खेतन में
सूझत ना कुछ कोटि जतन में
रूसल मेघ का करी बिजुरी
लउकल उनुका लाभ पतन में
गइल पताले सभ धरती रस
हाय पुनरबस! हाय पुनरबस!

तहरा बाद पूख जब आई
के जानत बा का ले आई
गोटी ऊहो बिछाई उनुके

www.bhojpurisahityangan.com

कि खेतिहर के दुख सुनाई
तू त ना भइल टस से मस
हाय पुनरबस! हाय पुनरबस!

खोनब अब पाताल के हमहूँ
लड़ब खूब महाकाल से हमहूँ
खून पसेना हमहूँ बहाइब
निकलब तहरा जाल से हमहूँ
चली ना तहरो कवनो बस
हाय पुनरबस! हाय पुनरबस!

बढ़ल किसानन के धुकधुकी
कबले धोखा के रथ रूकी
लटकल प्रान पेंडुलम जइसन
कइसे अन्न जल मुँह में ढूकी
दउरत-दउरत आवत बा गश
हाय पुनरबस! हाय पुनरबस!

बुता देलन असरा के दीया
दिहलन बोर भरोसा नइया
केकरा पर बिस्वास करीं अब
कबले कहीं दादा भइया
सभे देखावत बाटे सरकस
हाय पुनरबस! हाय पुनरबस!

असरा कुछ असरेसा पर बा
माघा के संदेशा पर बा
उतरा हथिया चितरा पर बा
सेवाती के पेशा पर बा
कांटक उनुके हाथ में बा जस
हाय पुनरबस! हाय पुनरबस!

www.bhojpurisahityangan.com

तूहूँ हो गइल केकरा बस
तूहूँ धोखा देब का जी
तब कइसे घर घंटा बाजी
अइब त अब डंटा बाजी
हाँ जी! हाँ जी! हाँ जी! हाँ जी!



www.bhojpurisahityangan.com

राम जी से अरजी

राम जी
रउवा त घेरा गइनीं
महलिया में
अब भेंटाइब नाहीं
हमरा गँउवा गलिया में!

करत रहीं हर मन वास
बनि के सभके
आपन खास
जइसे बसेला सुगंध
फुलवा कलिया में!

छोड़ि के
सबहर राजो पाट
घूमत रहीं घाटे - घाट
कइसे जलिया में फँसि गइनी
केकरा चलिया में!

घुमनी जंगल
नदी पहाड़
झोपड़पट्टी झाड़ - झँखाड़
देखत रहनी के बा कइसे
कवना हलिया में!

सभका रहे
मन में आस
करब जुलुम अन्हरिया नास
जब पुकारब दउरल आइब
हर सवलिया में!

www.bhojpurisahityangan.com

भइनी
महामहल के वासी
अब त रहब अयोध्या कासी
कइसे सुनब मोर पुकार
बाजत झलिया में!

भइल बड़ा
बड़न के साथ
जेकर लमहर - लमहर हाथ
अब ना आइब रउवा
हमरी पलनिया में!

अब त लागी
बड़-बड़ पहरा
रउवो बनब गूँगा बहरा
अब बिकाइब रउवो
बड़की दोकनिया में!

मनवा कांटक के हलकान
होई पइसा के पहिचान
छूँछा के पूछा के
का बा?
तोरा बगलिया में?



www.bhojpurisahityangan.com

मन के बात

बेरि - बेरि
बात इहे मनवा में आवे
असली सुराज कइसे देस हमार पावे
भूख भय भूत
नाहीं केहू के सतावे
दोसर के कमाई केहू दोसरे ना खावे।

खून आ पसीना
जेही आपन बहावे
ओकरे कमाई ओकरा हिस्सावा में आवे
देसवा के राजा
अपना लोगवन के भावे
पगहा ना कवनो कसाई के धरावे।

नाहीं केहू-केहू के
सतावे तड़पावे
मिल्लत के प्रेम धून मिलि जूलि गावे
जान आ परान देके
धरती बचावे
जंगल पहाड़ नाहीं केहुए भसावे।

झुठो फर्रो गाल
नाहीं केहुए बजावे
अपनो ईमान धरम सबहिं बचावे!
छल आ कपट
केहू के ना भरमावे
नफरत बढ़ाके भाई-भाई के लड़ावे।

शांति के कपोत
ऊँचा पाँखि फइलावे

www.bhojpurisahityangan.com

फणिधर के माई मूवे मातम मनावे
कवनो दँइत नाहीं
अदिमी चबावे
स्वारथ में कवनो कानून ना बनावे।

कांटक कहत
बाज जोंक मरि जावे
चहकत चिरइयन के शिकार ना बनावे
शोषण, दमन, मिटे
सभे सुख पावे
मिलि जुलि एगो नया दुनिया बनावे।



www.bhojpurisahityangan.com

एगो टापू

एह समुंदर में लहर के
देह टापू दह रहल बा
बह रहल बा
ज्वार भाठा सह रहल बा।
झील बा परबत इहाँ बा
खाई आ जंगल इहाँ बा।
झील में झाँकीं त लउकी
बहुत बड़ संसार एगो
मौन मूक उद्‌गार एगो।

परबतन के मोह में
के ना भुलाइल
आ लोभाइल
छिपल बा रसधार जेमें
आहा! अमरित धार एमें।
जंगल में खोज मंगल
के रहल हरदम बा जारी
रहल रंग सिंदूर भारी।

बाकी खाई सोख लेता
खुशबू सबके
बीज सिरजन के जगत के
जोश, जश आ जतन सभके।
दूगो चिरइन के बसेरा
इहाँ बाटे
एक दोसरा के जे ताके
स्नेह, ममता, प्रेम के तालन में झाँके।

www.bhojpurisahityangan.com

द्वेष ईर्ष्या, जलन, विष
खलनायकी भी खूब माके।
केकर ह टापू सिरजना
के बताई
बूझत समुझत सऊँसे जिनगी
बीत जाई।



www.bhojpurisahityangan.com

ई कइसन मिठाई

चल
चलींजा
खूब लूटीं जा
भूँड़ी से छूटींजा
कुछ लो के कूटीं जा
बँटाता नफरत के मिठाई
फेनु कबो ना भेंटाई
बम्बइया ह
जवन उधियाला हवा में?

ना ना
बाकी ओसहीं उड़ेला हवा में
फेंटाइल बा नीमन दवा में
दिल्ली से आइल बा
बहुते लोग धधाइल बा
कुछ होई तब?

ना ना, कुछ ना होई
जे खाई ऊ ना रोई
जे सोई सेही रोई
अरे यार
डेरात काहें बाड़ऽ
एने ओने हेरात काहें बाड़ऽ
खास-खास के एलान बा
कि इहे देश के शान बा
ना खइबऽ त पछतइबऽ
जेले में ध के जइबऽ!

www.bhojpurisahityangan.com

ना दादा, ना
भलहीं मर जाइब
हम ई मिठाई ना खाइब
आ हम जान बचा के चलनी पराय
आसमान में बदरी रहल मड़राय!



www.bhojpurisahityangan.com

हम भक्त हईं

हम भक्त हईं
सभसे बड़का देशभक्त हईं
ना ना, दोसर केहू ना
हम! खाली हम्म!
अपना सँघतियन खातिर बेच सकत बानीं
कण-कण, पुरजा-पुरजा
एह धरती के
हम एह धरती के इतिहास के
सभसे करिया वक्त हईं
हम भक्त हईं।

हमरा प
हँसे मत केहू
हम हँसी के पात्र ना हईं
कुपात्र ना सुपात्र हईं
साधुओ हईं
सन्यासियो हईं
अंग्रेजो हईं
अमरीकियो हईं
(ना ना, बहुरूपिया ना)
एही लोगन से अनुरक्त हईं
हम भक्त हईं!

हमरा तनिको इसिक-फिसिक ना भावे
प्यार मोहब्बत ना भावे
मुँहजोर सवाली ना भावे
अनुचर चाहींला सड़कन पर
नाचे जे हमरा धड़कन पर
इतिहास बनावल चाहींला

www.bhojpurisahityangan.com

इतिहास मिटावल चाहींला
ना चाहीं हमरा इंद्रधनुष
एकरंग जगावल चाहींला
भाषा के मार सशक्त हईं
हम भक्त हईं।

हम कुछुओ खाईंला ना
खाली सुँघींला
(सुँघला के मतलब रावा सभे जानते बानी)
खाली सुँघींला आ लोहू पिहींला
बिस्वास करीं हम झूठा ना हईं
झूठ ना बोली, झूठ नइखीं बोलत
रोज रामजी के माला फेरींला
अइसन भक्त हईं
हम सभसे बड़का देशभक्त हईं।

मूअल-जीयल केहू के हाथ में नइखे
हानि-लाभ जीवन-मरन
जस-अपजस बिधि-हाथ
सभ रामजी के माया ह
नश्वर ई काया ह
त फेनु अस्पताल के का जरूरत
(जतने जल्दी मुकुती मिले)
पढ़ी सेहू मरी
ना पढ़ी सेहू मरी
त ढेर पढ़ला के का जरूरत
गोइंठा में घीव सुखवला के का जरूरत
ढेर पढ़ला-लिखला से दिमाग खराब होला
(एही से सीट घटवनी, फीस बढ़वनी)
सोचे समुझे वाला के हम दुश्मन सशक्त हईं
हम सभसे बड़का देशभक्त हईं!

www.bhojpurisahityangan.com

ए हो!
ए बबुआ खोजी पतरकार
ढेर मत चिचिया अत्याचार! अत्याचार!
सरकारी भ्रष्टाचार! जनता के अधिकार!
पढ़ि ल पहिले इतिहास हमार
ना त दउरि जाई बीच सड़क पर हमार कार!
तहरा जनता का बले नइखे बाँचल
हमार सरकार
जिंदाबाद ईवीएम हमार
नइखे जनता के दरकार
हम खुदे स्वयंभू तख्त हईं!

हम सभसे बड़का देशभक्त हईं
हम भक्त हईं!
हम भक्त हईं!



www.bhojpurisahityangan.com

हाय रे अग्निवीर

हाय रे अग्निवीर
तहार कइसन तकदीर हो
चारे साल के बाद तहार महकी शरीर हो
रोटी खातिर दर-दर के होखबऽ भिखारी
लोगवन के नजरी में जइबऽ तू गीर हो!

अतना पसेनवा बहावल
भइल बेकार हो
भेंज दीही घरवा बलाते सरकार हो
घर परिवरवा के टूटिहें सपनवा
बाल बाचा पोसल होई ममिला गंभीर हो!

नाहीं कवनो पिनसिन
ना जिये के आधारवा
घर के ना घाट के, का कइलस सरकारवा
कइसन कसइया बाटे देश के मलिकवा
चढ़ती जवनिया में मरलस तीर हो!

छव महीना ट्रेनिंग क के
अग्निपथ प जइबऽ
दुसमन के सेनावा से तुरते मरइबऽ
सतरून के ट्रेनिंग सोझा टिक नाहीं पइबऽ
नेतवन के बेटा नाती होइहें अहथीर हो!

पढ़ल-लिखल दउरल-धूपल
भइल सभ बेकार हो
भोर भिनसार के पसेनवा बेमार हो
बाबू के मजूरिया आ माई के उमेदिया
छतिया में अँटकल टभकत पीर हो!

www.bhojpurisahityangan.com

कहाँ जाइब का करब
ना लउके रहतिया
लउकेला आग सगरो दिनवा आ रतिया
नवहिन के जिये के करेला बंद रहिया
लाते-लाते रँउदे कहेला कांटक वीर हो!



www.bhojpurisahityangan.com

एगो भाई के बयान

आहि ए करेजऊ
धराला नाहिं धीर हो
रहि-रहि उठेला करेजवा में पीर हो!

बेटवो से बढ़ि
समुझनी हो भाई
काढ़ि-काढ़ि करजा पढ़वनी पढ़ाई
देखनी अकासे
पहुँचावे के सपना
तेजनी मेहरियो के सभ सुख सपना
अरे तरे करेलऽ तू मारि-मारि तीर हो
आहि ए करेजऊ .....।

आधा पेट खाइ के
बनवनी अभियंता
टोलवा पड़ोस जाने जाने सारी जनता
हाथा पाई करेलऽ
आ देल रोज गारी
घरवो से हमरा के दिहल निकारी
ढर-ढर ढरके बुढ़ती के नीर हो
आहि ए करेजऊ .....।

असरा रहे कि
छाँह इचिको भेंटाई
नाव यश बढ़ि परिवार जगमगाई
लागता कि
एही हूके सुगना पराई
निकरे ना शूलवा कहाला ना हो भाई

www.bhojpurisahityangan.com

रूखा-सूखा खइनी खिअवनी तोके खीर हो
आहि ए करेजऊ .....।

आपन हारल
अवरी मेहरी के मारल
केकरा से कहीं जाता नीके तरी तारल
कांटक बेआकुल हीया
सुनीं सभे लोग हो
हूमिया करत जरल हाथ इहे सोग हो
कबो मन करे बनीं सधुआ फकीर हो
आहि ए करेजऊ .....।



www.bhojpurisahityangan.com

एगो व्यंग्य कविता

लहर सिकोरीं ए महराज
जियत रह हे नासाबंदी
खेललऽ खेल बहुत धुरफंदी।

वर्दी के कइलऽ धनवान
तहरा पीछे लोग महान
भितरे बढ़ल पुरनका खेल
ऊपर हाला बा पाबंदी।

गंगा जी चुपचाप सहेली
आर पार से चले पहेली
गड्डी - गड्डी हाथ मिलावे
कुरसी कहे लकम ह गंदी।

गाँव-गाँव में महल उठवलऽ
झोपड़पट्टी के जुड़ववलऽ
लछिमी अइली फारि के छप्पर
नाच देखवलऽ तू छलछंदी।

आधी दुनिया खुश बा खूबे
चाचा खुशफहमी में डूबे
होम डिलीवरी मस्त-मस्त बा
जरस मरस उनुकर प्रतिद्वन्दी।

लहर सिकोरीं हे महराज
डूबल जाता गाँव समाज
रक्षक पाठ करे भक्षक के
रूप बदललस ई बहुधंधी।

www.bhojpurisahityangan.com

माथा पकड़ रोवेले कांटक
नया रोज लउकेला नाटक
केकरा से मन पीर बतावस
नंदी कहि ना सके पसंदी।
जियत रह हे नासाबंदी
कइल खेल बहुत धुरफंदी।



www.bhojpurisahityangan.com

बघवा मास्टर

एगो रहन बघवा मास्टर
धोती कुरता पेन्हत रहन
आ ऊपर से करिया जाकेट
चंडूल रहन
गोर गार चमकत चेहरा रहे
ऊ जब देखस कि कवनो लइका
मइल कुचइल आ फाटल चिटल कुरता पाएंट पेन्हि के
खउराइल कपार के बार लिहले
बिना तेल फुलेल के मरुआइल मुँह लटकवले
इसलेट पिनसिन लेके पढ़े आइल बा
त खउरिया जास
ओकरा के भीरी बोला के पूछस,
''केकर लइका हवे?''
''फलना, त तेहूँ पढ़बे, हुँह!
सभ कुकुर कासिये जइहें स
त हंड़िया के चाटी रे!''

ऊ कसमसा के बाँस के कइन के छड़ी उठावस
आ आन्हाधुन्ह तड़ातड़ लागस मारे ओकरा के
लइका बाप-बाप चिचियाते भागे इसकुल से
फेर कबो इस्कूल के ओर झाँके ना आवे
दोसर कवनो लइका आवे त ओकरो संगे इहे करस
असहीं मारि - मारि के
ऊ दखिन टोला के कतने लइकन के
इस्कूल छोड़ा दिहलन
लइकन के मारत खा उनुकर मुँह
बाघ अस हो जाता रहे, एह से
सभ लइका उनुका के बघवा मास्टर कहे लगलन स

www.bhojpurisahityangan.com

उनुका के दूरे से देखते चिचियाये लागत रहन स
बघवा मास्टर आवत बाड़न रे!

बाद में खबर मिलल कि बघवा मास्टर मू गइले
बाकिर केहू कहत रहे कि ऊ मूअल नइखन
एगो नया बैद आइल बा
उनुका के जियावे के कोशिश होता
सच्चाई का बा,
रउवा सभे बताइब का?



www.bhojpurisahityangan.com

का इहे प्यार ह

कहँवा बाड़ू
सुनत बाड़ू
ए मलकीनी, हेने आवऽ
घर में ढुकते चिचिअइलन एतवारू भाई।

का बात बा
बोलीं
झझकत पूछ बइठली मलकीनी जी।

द कुछ पइसा
दाँत चियारत बोलले
एतवारू भाई।
नइखे पइसा
झटकारत बोललली मलकीनी।

काम चलावऽ
एतवारू के ओठ सुखाइल
ताके लगले मलकीनी के
टुकुर - टुकुर जब।
देले बानी का कबहूँ
दस पाँच गिन के
फेनु झझकली मलकीनी जी
हाथ नचावत।

ना भाई,
तू इज्जत बचावऽ
देहले बानी बचन केहू के
करत निहोरा एतवारू के
नजर झुँक गइल।

www.bhojpurisahityangan.com

कवन काम बा?
तनिका पिघिलल मलकीनी के
काठ करेजा।

भीतर गइली
कुछ ले अइली
काटि छाँटि के धइले रहनीं
रउवे खातिर
फाटल कुरता देखनीं जबसे।

गिनते एतवारू बोललले तब
छठ में पहिरे खातिर एगो
नीमन चुनरी देखले बानीं आइल
बाटे फेरीवाला
मोलतोल क लेले बानीं।

आँखि मिलल दूनो बेकतिन के
भरल आँखि दूनो बेकतिन के
झरल आँखि दूनो बेकतिन के
ओठ सियाइल।

सोचे लगनीं
इहे प्यार ह
का इहे प्यार ह
के बतलाई?



www.bhojpurisahityangan.com

ऊ रोटी ना ह

ऊ रोटी ना ह
जवन छितराइल बा
रेलवे लाइन प
रँउदाइल बिधुनाइल
आदमिन के खून माँस में सनाइल
ऊ जीयत जिनगी ह
ओकर निशानी ह
बहत पसेना के कहानी ह
सपना ह
बूढ़ बाप-महतारी के
बबुअन-बुचिअन के तुतली बोली
आ किलकारी ह
नेह-सनेह ह घूँघट में छिपल
टह-टह लाल सेनुर के
के खेलल अइसन खेल
कि मचल भगदड़ आ रेलम पेल
कि सभ तहस नहस भइल
अपना सत्ता के सवारथ में
करतूत ह आनन फानन में
राजाजी के कइल
छिनलस रोजी-रोटी
दउरवलस सड़क दर सड़क
भूखे पियासे
हजार-हजार मील
ठोकलस अतीत वर्तमान
आ भविष्य के पाँवन में कील
एगो कठकरेज दिल!

www.bhojpurisahityangan.com

कुटुकी–एक

जवन कइनीं
बहुत रउवा कइनीं
हक गरीबन के सभ रउवा खइनीं।

लउकी तिरलोक तीनो रावा अब
काहें धइले बा रउवा बेचइनी।

केहू बाँचल ना दँवक से रउवा
समुझीं रउवा समुंदर में गइनीं।

काग कउवन के माला पेन्हवनीं
भेस अनगिन रवा काहें धइनीं।

धूर बहुते आँखिन रउवा झोंकनीं
रामजी के नाँव ले के अघइनीं।

नवही तड़पत बाड़े काम खातिर
रउवा यारन के देके सभ धधइनी।



www.bhojpurisahityangan.com

कुटुकी-दू

लूक में लुकाइल रहीं
लउकीं मत!

खूब खाईं लउका
खेलाई खूब लइका
छउँकी मत!

लागल बा लुटेरावा
लगावे खातिर लासा
फउँकी मत!

लीला सभ देखाय के
लगवले बाटे लेंगा
डउँकी मत!

लाश के लापाता करे
लागल बा लवकिया ई
बउँकी मत!

लइकन से लामे हाँके
ओकनी के बार पाके
हउँकी मत!

कांटक लेंगा लवना ह
घरवा जरवना ह
इहे ह उजरना!

ना समुझ बसवना ह
बतिया ह साँच
रावा चउँकी मत!

www.bhojpurisahityangan.com

कुटुकी-तीन

बड़े-बड़े झोरावा में
थोड़े-थोड़े अन्न दनादन-दनादन!
बाँटे राजाजी के गन
दनादन! दनादन!

कहाँ बाटे दिलवा
आ कहाँ बाटे मन दनादन-दनादन!
मारे तीरवा सघन
दनादन! दनादन!

महँगी बाजारवा में
कढ़ले बा फन दनादन-दनादन!
करे भगता पसन्न
दनादन! दनादन!

लोहा लाल करेले
मारेले भारी घन दनादन-दनादन!
छीने मेहनत के धन
दनादन! दनादन!

केहू लोढ़े फूल फल
केहू बेचे तन दनादन-दनादन!
एने जूरे ना कफन
दनादन! दनादन!

चिरईन के दाना डाले
हते के ह फन दनादन-दनादन!
बोले भोंभा टनाटन
दनादन! दनादन!

www.bhojpurisahityangan.com

कांटक बहेलिया के
बूझे नाहीं जन दनादन-दनादन!
खोवे अपनो सपन
दनादन! दनादन!



www.bhojpurisahityangan.com

कुटुकी–चार

आछा त एगो बात कहीं?
का?
हमहूँ मू गइनीं!
धत्त! तू त छछाते लउकत बाड़ऽ मरदे!
उईं! हम लउकत बानीं!
हस्पताल में अतना बढ़िया इंतजाम
आ एलाज होता कि लोग छटपटाते छटपटात
तुरंते सरग में चल जात बाड़न!
त तू कइसे मू गइलऽ?
धत् मरदे!
हतना लोग गइलन त हम का बाकिये बानी?
हमरो बारी आइये जाई!
का! ई का कहलऽ हो?
हमरो हुटहुटी चलत बा!
आहि ए सरकार!
खाली भोट के बा दरकार!

www.bhojpurisahityangan.com

कुटुकी-पाँच

हाय रे मेरे देसवा महान
राजा जी ने
का कर दी!
बंद कके सूते आँखि कान
राजा जी ने
का कर दी!

कहे आक्सीजन के
कमी नाहीं देश में
घोड़ा बेचे खातिर घूमे देश आ बिदेस में
एने तड़पि-तड़पि
जाये जान!
राजा जी ने
का कर दी!

छछनत फिरे लोग
लेके आपन रोगिया
उनुका भेंटाइल एगो झूठा एगो जोगिया
कहे खाली बेड
बेपरमान!
राजा जी ने
का कर दी!

मुँहवा प जाब नाहीं
झूठ साँच बोले
कहे खूब रोइये कि मन शांत होले
मउवत के
खोलले दोकान!

www.bhojpurisahityangan.com

राजा जी ने
का कर दी!

कांटक जी के कुटुकी ह
दु:ख जनि मानीं
रामजी के नाँव लीहीं राजा जी के मानी
घरी घंट दीया
दीही जान!
राजाजी ने
का कर दी!



www.bhojpurisahityangan.com

सुग्गा

राम राम पढ़ऽ सुग्गा
राम राम पढ़ऽ।

राम राम पढ़बऽ त
चुपचाप रहबऽ
चुपचाप रहबऽ किताब नाहीं पढ़बऽ
किताब नाहीं पढ़बऽ इतिहास नाहीं जनबऽ
इतिहास नाहीं जनबऽ त पींजड़ा ना तुरबऽ
पिंजड़ा ना तुरबऽ कबो एक नाहीं होखबऽ
एक नाहीं होखबऽ आकाशे नाहीं उड़बऽ
आकाशे नाहीं उड़बऽ बिरोध नाहीं करबऽ
बिरोध नाहीं करबऽ ना हमरा से लड़बऽ।

राम राम पढ़ऽ सुग्गा
राम राम पढ़ऽ।

चना बा कटोरी में
तू खा के पड़ल रहऽ
अपना पिंजड़वा में सभ कुछ सहऽ
खा के पड़ल रहबऽ त कहब तवन करबऽ
कहब तवन करबऽ आ आगे नाहीं बढ़बऽ
कहब तवन करबऽ आ गोड़ धो के पियबऽ
गोड़ धो के पियबऽ कमाई सभ देहबऽ
नइखे जरूरत तहरा काम कवनो करे के
कुछो मेहनत करे के आ भूखे दुखे मरे के
मुफुते में देत बानी खुशी-खुशी गहऽ
चुपचाप रहऽ सुग्गा चुपचाप रहऽ।

राम राम पढ़ऽ सुग्गा
राम राम पढ़ऽ।

www.bhojpurisahityangan.com

मंदिरन में विद्या
बइठवनी आपन सुग्गा
रटले रटइहें स आ चुगिहें स चुग्गा
रटले रटइहें स आ हमरे गुनवा गइहें स
ना नुकुर जे करी त सुरधामपुर ले जइहें स
उमड़ घुमड़ के चारो ओर
साँझ दुपहरिया चाहे भोर
ऊहे पाठ दोहरइहें स आ पट्टी आँखि बन्हइहें स
पोसुआ कइसे होखल जाला सभके राह धरइहें स
ठोक ठाक के कहब जवन ऊहे सभ करइहें स
के, कइसे, कतना कबो सवाल जनि करऽ
चारो ओर से नक्शा के तू हिंदू-हिंदू गढ़ऽ।

राम राम पढ़ऽ सुग्गा
राम राम पढ़ऽ।



www.bhojpurisahityangan.com

रोवेले मइंनिया बगिया में

रोवेले मइंनिया बगिया में
पिया अंगिया लागल अपना भगिया में।

सउँसे बगइचा कटाई गइल पियवा
केहू ना देखावे अन्हरिया में दियावा
भंगिया घोराइल बाटे गंगिया में।

धह-धह जरे लागल जंगल पहाड़वा
जिया जंतु जरे मरे रही ना परानवा
धुआँ - धुआँ फइलल बा जगिया में।

खोंतवा उजरि गइल बाँची कइसे बचवा
लंगटे उघारे सभे नाचे लागल नाचवा
बटुए लुकाइल लोग दगिया में।

मिली ना अमवा ना मिली जमुनिया
दिने दुपहरिया ई जरि जाई दुनिया
पनिया ढोआई बहँगिया में।

कांटक बलमुआ के कुछो ना बुझाला
घूमि-घूमि सगरो मचावे खाली हाला
बडुए भुलाइल अपना पगिया में।



www.bhojpurisahityangan.com

चिरइया रे

चिरइया रे
तनी पाँखि फहरा ले
उड़े खातिर आपन विचरवा बना ले!

तोरा के पूरा असमनवा बोलावे
सपना देखावे कई रंगवा देखावे
हिम्मत न हार तनी मनवा बना ले!

उड़बे ना जबले ई जलिया फँसाई
करी शिकार आपन जीभिया पिजाई
जुलुमी शिकरियन के ठेंगा देखा दे!

सभका से मिलिजुलि कहु आपन बतिया
नाहीं त कटले ना कटी ई रतिया
अपनन के बीच सभ भेदवा भुला ले।

बझवन के अबहूँ ले बूझु होसियारी
पंजा में दाबे के बाटे तेयारी
ते आपन हाथ गोड़ ठोरवा पिजा ले!

कांटक जमीन आसमान सभ तोरे
बझवा जमावे अधिकार आ अगोरे
अबहूँ ले नीन छोड़ जिनिगी बचा ले!

www.bhojpurisahityangan.com

कउआ

भेस कबूतर के धइले अचके आइल एगो कउआ
सबसे ऊपर फेंड़ प बइठल लागल उठावे हउआ।

सभकर आँखि निकाले खातिर कइलस ऊ ऐलान
आवे हमरा भीरी जेकरा लउके के ना ठेकान
आँखि काढ़ि के चश्मा देहब लउकी सउँसे गँउआ।

पहिले खोदलस आँखि कहलस अब मुफुत के खाईं
हमरे माला फेरीं सभे हमरे गुनवा गाईं
राम नाम के मरहम लेपीं जब दुखलाये घउआ।

अब दिमाग खाये के कइलस ऊ तइयारी
कइलस सुरसती के मंदिर में सेन्हमारी
बाझ इयारन के बइठवलस चउआ चउआ।

समुझल लोग कबूतर ह ई झूठ ना बोली
खून खराबी ना करी नफरत ना घोली
ई ह शांति कपोत मचाई ना भक भउँआ।

कांटक अंगुली धइलस फिर फिर बाँहि पकड़लस
काँव-काँव क के बारी - बारी से कड़लस
भोट चोरा के लगा लेलस सभ आपन दउँआ।



www.bhojpurisahityangan.com

खटमल जी

खटमल जी ह नाँव हमार
जनमजुगी धंधा व्यापार
देश - देश में जाइलाँ हम
जहाँ बोलावेले सरकार
चलीं अब छम - छम नाचीं।

गते गोड़ जमाइलाँ हम
तब चद्दर फैलाइलाँ हम
खा पी के बरियार बनींलाँ
तब कुरसी हथियाइलाँ हम
सुनीं ध्यान से बात हमार
चलीं छमाछम नाचीं।

हम हईं संसार के आका
दीहीलाँ सभका के धाका
ईरानी, अफगान से पूछीं
कहँवा कतना ढहनी पाका
बोलीं अब हमार जयकार
चलीं छमाछम नाचीं।

हँ जी हँ हम खटमल हईं
रुधिर पेट भर पीहींला
सूते वालन के लहुआ पी
आपन जिनगी जीहींला
देश - देश के धन दौलत हम
भेस बदलि के लीहींला
अड़ियाइल तनिको केहू त
पान, रोटी, बम, दीहींला
छूए सभे चरन हमार
चलीं छमाछम नाचीं।



www.bhojpurisahityangan.com

गोजर के गोड़

गोजर के गोड़ मूड़ी
धइलन स चूँटा
गोजर अरारे प गड़ले बा खूँटा
एने बा खाई
पहाड़ ओने लउकत
कइसे दो आफत सभ एक साथे जूटा।

पाप भरल पीपा बा
उब चुभ परान
घड़िला दु कइसे मझधारे में फूटा
अनगिन के खइलस
चबइलस अनगिनत के
जुमलन प कइसे कढ़ाई बेलबूटा।

बाजत बधाव बा
किसानन का घर में
लहराई फेनु हमरा खेतवा में भूटा
चिंता में गोजर
कि के कामे आई
लागत बा अपनन के साथ अब छूटा।

एने ओने ताकेला
गोजर बेचारा
जेही देखे, कहेला लबरा आ झूठा
जप-तप कवनो
ना आवेला कामे
रामजी से नेह-नाता अचके में टूटा।

सभ धन सँघतियन के
कर दिया नावे

www.bhojpurisahityangan.com

सपना गरीबन के लमहे में लूटा
जवन ना भइल
गुलामी के दिन में
गोरन के कान कटलस काला कलूटा।

सइ-सइ गो गोड़ जेकर
सइ-सइ गो हाथ
पेचे पंचाइत में पड़ल बा माथ
भगला भूत के
लँगोटी बा भल
साथ चले हाड़ा आ साथ चले चूँटा।

गरदन में टेंगरा
अँटक गया हाय राम
सकदम बचावे केहू दम जाये घूँटा
लीले कि छोड़े
छुछुनरी के साँप अब
कांटक बा साँसत कपार आपन कूटा।

www.bhojpurisahityangan.com

साँप जीयत बा

साँप जीयत बा अभी मरल नइखे
पोंछि पटकत बा तनिक डरल नइखे।

रसरी बरल रहे जे फँसरी खातिर
अबही नीके तरी जरल नइखे।

बैल बइठल बा अभी सरेहे में
अँठई एकर अभी झरल नइखे।

रीढ़ टूटी ना फन थुराई ना
तबले छूअल तनिक सरल नइखे।

बाटे खतरा पैंतरा से एकरा
आँख मूँदीं मत ई टरल नइखे।

दीया रखाइल रहे जे अन्हरिया में
अबहीं नीके तरी बरल नइखे।

मिलि के रोपल रहे जवन पौधा
पतई हरियर बा मगर फरल नइखे।

आईं सोंची जा फरे फुलावे के
उमेद बाटे अभी मरल नइखे।

भँइसा कांटक खूबे रउँदले बाटे
आखिरी साँस तक चरल नइखे।



www.bhojpurisahityangan.com

खिसियाइल बिलइया

आहि रे आहि खिसियाइल बिलइया
बोरा में कसे के रहे उपइया।

गुमसुम रहेले आ नोचेले खंभा
कइसे नथाइल ई भइल अचंभा
खोजले बएदवा बा एकर दवइया।

चूएला मंदिर आ टपके महलिया
पचल ना घीव खूब भइल छियाछिया
बएदा पकड़ले बा एकर कलइया।

बोरा से बाँचल त छप्पर प बइठल
मोछि सहलावे ना छुटल बा अँइठल
पवले बिया एगो नयकी सलइया।

खंभा नोची अवरू बदला के सोची
पलखत में चहकत चिरइयन के नोची
अब कबो लेवे ना रामजी के नँइया।

मुसवन के चाँपी, चिरइयन के चाँपी
बैदा के घरवा दुअरवा के झाँपी
कांटक करी ना केहू के भलइया।

बझवा से साँठ - गाँठ एकर सहइया
मंदिर-महजिद-मूरति भइल छलइया
चेहरा प लउके ना तनिको ललइया।

नइखे भेटात अब मक्खन मलइया
घूमि - घूमि दुनिया में लेवे बलइया
देवे बलइया आ देवे बधइया।

आहि रे आहि खिसियाइल बिलइया
बोरा में बान्हे के रहे उपइया।

www.bhojpurisahityangan.com

कुकुर

एगो कुकुर भुँकेला
जबे जहँवे देखेला।

कुकुर भुँकत रहेला
हाथी चलत रहेला
इहे लोगवा कहेला
एगो कुकुर भुँकेला!

ऊ त काटल चाहेला
बाकिर लोगवा कहेला
कुछो चाटल चाहेला
एगो कुकुर भुँकेला!

ऊ त हवे निपटे पागल
ह लतमरुआ आ गँड़दागल
दाँते धरे चाहेला
एगो कुकुर भुँकेला!

खाली भों – भों जानेला
तबो आदर चाहेला
सभके खोरहल चाहेला
एगो कुकुर भुँकेला!

हमरा लागे खूबे डर
कइसे छोड़ीं मगर डगर
ऊ डेरवावल चाहेला
एगो कुकुर भुँकेला!



www.bhojpurisahityangan.com

बकरिया रे

बकरिया रे
तोर महिमा बा भारी
गुन गावे खूबे संविधान सरकारी!

दुधवा जे पियेला
ऊ बनेला महातमा
दुनिया कहेला महामानव देवातमा
आजु होला पठरुन के बलि बरियारी!

तोरे से आ तोरे खातिर
तोरे लोकतंतर
ज्ञानी जन दिने राति जपे इहे मंतर
बाकिर तोरा घरवा के देवेलन उजारी!

तहरे के बेचि कीनि
चले दुकनदारी
दूहि गारि लेवे नीके देवे दुतकारी
काहें टुकुर-टुकुर ताकि बनेलू बेचारी!

तहरा के दूहे
सभे केहू पारापारी
तबहूँ ना जिनगी के सधे देनदारी
लोहू पीये मास चाभे बने अवतारी!

सभ अनमोल धन
धरती के फेंके
सभ रूप रस गंध सँचल हबेखे
मगन भगत पाव पूजे धुँधकारी!

फानि कूदि बनरा
बइठेला डारी-डारी

www.bhojpurisahityangan.com

लोली थोथी देके बिकवावे लोटा थारी
कांटक भेजावे सभकुछ ससुरारी!



www.bhojpurisahityangan.com

गदहा गाथा

एक दिन गदहा
चरे न घास
दुख से अपने रहा उदास
सगरो रात
अन्हरिया रहे
हवा तेज पछेया तब बहे।

गदहा सोचे
मालिक कइसन
निपटे ससुर कसइया जइसन
बोझा भारी
दिन में लादे
रात होत भूँड़ी छटका दे।

ना दे चारा
ना दे पानी
रोज करे अपने मनमानी
ऊपर से आ
पीठ प बइठे
खूबे हँकड़े खूबे अँइठे।

बिरहा गावे
बिना राग के
सबकुछ करे हवाले नाग के
लाद के लादी
खूब हँफावे
ऊपर से मुँगरी बरिसावे।

अनकर खेतवा
चुपे चरावे

www.bhojpurisahityangan.com

भोर होखे के पहिले धावे
भइल बा ई
जीव कुकाठ
अब ना सहब पढ़ाइब पाठ।

मारब दुलत्ती
खूबे जोर
समुझत बा हमके कमजोर
पीठ प बइठी
जसहीं लोटब
घूँट लहू के अब ना घोंटब।

बदली प्रान त
धोबिया मानी
सभके जीव बरोबर जानी
सोचते सोचत
भइल बिहान
रचलस गदहा आपन बिधान।

मरलस डाँड़ कि
धोबिया उलटल
राजकाज सभ ओकर पलटल
मुँहकुरिये जब
धोबिया गीरल
गदहा के दिन अचके फिरल।

धइलस तब ऊ
गंगा किनार
धोबिया भागल समुंदर पार
मेहनत के
मिलल अधिकार
भइल कमेरन के जयकार।

www.bhojpurisahityangan.com

कांटक ओकरा
के गोहरावे
जे सोचे ऊ मुक्ति के पावे
उरुवन के दिन
लदे लदावे
गहन अन्हरिया दूर भगावे।



www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी साहित्यांगन चैरिटेबल ट्रस्ट के प्रकाशित पुस्तक

1. 'फेर ना भेंटाई ऊ पचरुखिया' (आत्म-संस्मरण)
   लेखक- डॉ. रंजन विकास
   दोसरका संस्करण-2024
   कुल पृष्ठ-342, मूल्य- ₹ 400.00 (पेपरबैक)।

2. 'एगो किताब मतारी बाप ख़ातिर (भोजपुरी अनुवाद)
   अनुवाद- डॉ. रंजन विकास
   पहिलका संस्करण-2025
   कुल पृष्ठ-293, मूल्य- ₹ 399.00 (पेपरबैक)।

3. 'उतरी हुई नदी का पानी' (हिन्दी गीत-संग्रह)
   कवि/गीतकार- सुनील कुमारे तंग
   पहिलका संस्करण-2025
   कुल पृष्ठ-190, मूल्य- ₹ 299.00 (पेपरबैक)।

4. 'धरती के गीत' (भोजपुरी गीत-संग्रह)
   कवि/गीतकार- सुरेश कांटक
   पहिला संस्करण-2025
   कुल पृष्ठ-192, मूल्य- ₹ 299.00 (पेपरबैक)।

ट्रस्ट के प्रकाशित होखे वाला किताब :

☆ 'आरा में दू महीना' (भोजपुरी अनुवाद)
अनुवाद- डॉ. रंजन विकास।

☆ 'रामेसर के चिट्ठी' (भोजपुरी उपन्यास)
लेखक- रंजन प्रकाश।

☆ 'रचना समग्र : शारदानन्द प्रसाद'
संयोजन-सम्पादन- डॉ. रंजन विकास।

www.bhojpurisahityangan.com

www.bhojpurisahityangan.com

"भोजपुरी साहित्यांगन"

भोजपुरी साहित्य के डिजिटल लाइब्रेरी

पर उपलब्ध

1250 किताब आ 275 पत्रिकन के

पढ़े खातिर

नीचे देहल URL पर जाईं

www.bhojpurisahityangan.com

भा

QR Code के स्कैन करीं



धरती के गीत



सुरेश कांटक

जन्म : 15 जनवरी, 1954

जन्म स्थान : कांट, बक्सर, बिहार।

शिक्षा : एम.ए., बी.एड.

प्रकाशित कृति :

हिन्दी किताब : एक बनिहार का आत्म-निवेदन, जमीन, जनता की अदालत, जाग मुसाफिर भोर भयो, खंडित सपनों का नायक, सूरज उगने से पहले, अनावरण, घुँघरू के बोल, चम्पा की चिट्ठी, किसान क्या करे, मगर पागल नहीं हैं जनार्दन बाबू (कहानी-संग्रह), जनगायक, नरमेध, खेत (उपन्यास), रक्तिमतारा (प्रबंध-काव्य), दस नाटक (हिन्दी पत्रिकाओं में प्रकाशित), आइना हूँ (कविता-संग्रह)।

भोजपुरी किताब : हाथी के दाँत, भाई के धन, सरग नरक, वन्देमातरम्, गुरुदेव, रधिया, दुलरुआ, पहिला नाटक, रहमान चाचा, सत्तावन के वीर बाँकुड़ा बाबू कुँवर सिंह, दरद ना जाने कोय, ब्रह्मर्षि विश्वामित्र, बिआह ना होई, भोर के लाली उर्फ़ नायकी पतोह, सपूत, बेमार बाड़ें सगुनी (नाटक-संग्रह), समुंदर सुखात बा, अँजोरिया के पीछे (कहानी-संग्रह), का ए बकुला (व्यंग्य कविता-संग्रह)।

देश के तमाम चर्चित पत्रिकन में दू सौ हिन्दी-भोजपुरी कहानी आ शताधिक गीत-ग़ज़ल-कविता प्रकाशित। देशी-विदेशी मशहूर कहानियन के भोजपुरी अनुवाद। अंग्रेजी नाटक जुलियस सीजर के भोजपुरी अनुवाद।

सम्मान/पुरस्कार : बनारसी प्रसाद भोजपुरी सम्मान 1993, फणीश्वरनाथ रेणु पुरस्कार (बिहार सरकार) 2015

सम्प्रति : अध्यापन से सेवानिवृत्त। 'कबीर कला मंच', कांट, बक्सर के संस्थापक। नाट्य मंचन आ रंग कर्म।

सम्पर्क : कांट, ब्रह्मपुर, बक्सर, बिहार-802112

मोबाइल : 9931837620

BHOJPURI SAHITYANGAN CHARITABLE TRUST

भोजपुरी साहित्यांगन चैरिटेबल ट्रस्ट

bhojpurisahityangan.ct2023@gmail.com

+91 8340535561

ISBN : 978-81-973622-9-3

₹ 299.00